दर्द की मुस्कान

दर्द की मुस्कान

राजेन्द्रकुमार शर्मा

नवम्बर के प्रथम सप्ताह की एक ढलती हुई शाम। अपने सीने पर तारों को आँखमिचौनी खिलाता हुआ खुला साफ आसमान। गर्मी को विदा करने के बाद जाड़ों के आगमन की सूचना देती हुई, हल्की फुरफुरी हवा और खुशगवार मौसम। मनोरंजन, दिल बहलावे और मौज-मस्ती की दावत देती एक दिलकश फिज़ा।

भारत के दिल दिल्ली में इंडिया गेट के पास बाबा खड़गसिंह मार्ग पर अधिक चहल-पहल थी। मोटर, स्कूटर, साइकिल दौड़ते चले जा रहे थे। सब जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहते थे, अर्चना थियेटर में। इस चहल-पहल, दौड़-धूप और भीड़-भाड़ का कारण था, कुमारी सूमी का कैबरे नृत्य। अर्चना थियेटर रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगा रहा था और थियेटर की यह सजावट इस बात की सूचना दे रही थी कि थियेटर में आज कोई विशेष आकर्षण है। आमतौर से इस थियेटर में संगीत और नाटक के ही कार्यक्रम हुआ करते थे और यह कार्यक्रम दर्शकों के लिए तरसते रहते थे। पर आज कुछ और ही बात थी। दर्शक, कार्यक्रम देखने के लिए तरस रहे थे। थियेटर के बाहर हाउस फुल का बोर्ड लगा हुआ था। यह हाउस फुल का बोर्ड इसी अवसर के लिए ही बनवाया गया था, क्योंकि इससे पहले इस बोर्ड की इस थियेटर को कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी थी। मन में उमंग और दिल में तमन्ना लिए हुए लोगों को हाउस फुल पढ़कर ऐसा लगा कि मानो किसी युवती ने किसी युवक को प्यार से पास बुलाकर तमाचा मार दिया हो। लोग गिड़गिड़ा रहे थे एक टिकट के लिए और जिनके पास टिकट था, वो इन लोगों को ऐसे देख रहे थे, जैसे कि फर्स्ट क्लास का यात्री चलती हुई गाड़ी की खिड़की में से उन सेकेंड क्लास के यात्रियों को देखता है, जो भीड़ के कारण गाड़ी में न चढ़ सके थे।

तीसरी घंटी वजी और इधर-उधर खड़े लोग थियेटर में जाने लगे। कुछ ही देर में थियेटर खचाखच भर गया और दर्शकों की नज़रें थियेटर के लाल मखमली पर्दे पर टिक गईं।

अब प्रतीक्षा असहनीय हो गई और दर्शकों की वेचैनी उनकी तालियों में गूंज उठी। पर्दा हट गया और थियेटर के मैनेजर ने सामने आकर अभिवादन किया और इतराते हुए दर्शकों को संवोधित किया—'कलाप्रेमियों नमस्कार! हम आपका स्वागत करते हैं। आज हम आपकी मनचाही कलाकार, सौंदर्य की मूर्ति, हुस्न की मलिका और नृत्य की रानी मिस लूसी को प्रस्तुत कर रहे हैं। तो, साहवान, सावधान, दिल थाम के वैठिए, देखिए, वो आ रही हैं, मिस लूसी। जिनके पांव में विजली की चंचलता है, जिस्म में जादू है और जिनकी हर अदा में कयामत है...मिस लूसी।"

स्टेज पर अंधेरा हो गया और फिर एक धीमी रोशनी की स्पाट लाइट में मुस्कराती, मदमाती, इठलाती, वल खाती हुई हौले-हौले, हल्के-हल्के मधुर संगीत के साथ प्रवेश किया मिस लूसी ने। नीली रोशनी में वर्फ से सफेद वस्त्रों में ऐसी लग रही थी, जैसे कोई परी हवा में तैर रही हो। वो सचमुच सौंदर्य की रानी थी। उसका गोरा, चमकता हुआ सुडौल शरीर वस देखते ही वनता था। उसमें मेनका का वो रूप था जिसमें किसी भी विश्वामित्र की तपस्या भंग करने की क्षमता थी। उसके नेत्रों में छलकते हुए पैमाने का उन्माद, झील की गहराई और लहरों की मस्ती थी। उसकी काली लटों से घिरा उन्नत ललाट वरसाती रात में किसी वादल की ओट से झांकते हुए चांद की तरह था। उसके गालों पर फूलों का शवाव था। उसके होंठ गुलाव की खिली हुई पंखुड़ियों की तरह थे। उसके गाल पर काला तिल तो ऐसा मालूम होता था कि विधाता ने इसलिए वनाया था कि उसे नजर न लग जाए। चोली में कसकर वंधे हुए उसके उन्नत उरोज ऐसे लग रहे थे, मानो यौवन के समुद्र में उमंगों और उन्माद की उठती हुई तरंगों को किसी ने वन्दी वना दिया हो। उसकी वांहों में लता की लचक थी। और सवसे आकर्षक थी उसकी मुस्कान, उसकी मुस्कराहट, जिसमें चुम्वक का आकर्षण, जलतरंग की सरलता और फुलझड़ी की चमक थी। ऐसा लगता था, मानो खजुराहो की कोई मूर्ति सजीव हो गई हो। उसके सुगठित

शरीर की सीमा-रेखाओं के उभरते और मुड़ते हुए कोन किसी पुरान चित्रकार की कल्पना का परिचय दे रहे थे।

पाश्चात्य संगीत की लय पर उसके पग आगे बढ़ने लगे और जैसे ही उसके पग आगे बढ़ते जाते, लोगों के दिलों की धड़कन भी बढ़ती जाती। स्टेज के बीच आकर उसने अपनी सुराहीदार गर्दन को झटका देकर एक ऐसा मनचला कटाक्ष फेंका कि बस मानो कामदेव का बाण हो। वह जब भी इस तरह गर्दन को झटका देती तो उसके घने काले रेशमी बालों की लटें, उसके कुन्दन से दमकते चेहरे को ढक लेती और ऐसा लगता मानो बादल का कोई आवारा टुकड़ा चन्द्रमा के साथ आंखमिचौनी खेल रहा हो। इसके बाद उसने अपनी गोरी लचकदार बाहें बड़ी ही भावपूर्ण मुद्रा से फैलाकर दो-तीन चक्कर काटे। पल भर के लिए उसकी गर्दन झुकी और फिर उसने कुछ इस अदा से उठाई कि दर्शकों में एक बिजली कौंध गई और उसने दर्शकों की तरफ इस तरह देखा मानो पूछ रही हो—'कोई बता दे कहां कमर है !' उसने इसके बाद केंचुली की तरह की सफेद पोशाक उतार फेंकी और दर्शकों को लगा जैसे हुस्न के पिटारे को किसी ने एक परत खोल दी हो। उसके शरीर पर अब नीले रंग की सितारों जड़ी चोली और नीला ऊंचा घाघरा रह गया। उसके शरीर से सौंदर्य की किरणें फूट रही थीं। संगीत ऊंचा और तेज हो गया और वो मंच पर इधर से उधर भौंवरे की नादृत्य-मुद्रा में मंडराने लगी। रोम-रोम फड़कता हुआ। अंग-अंग दहकता हुआ, लहरों की तरह लहराते हुए बाल, ज्वारभाटा का जोश लिए हुए सीने के उभार, पहाड़ी पगडंडी की तरह मचलती कमर, कमल के नाल सी मृदुल टांगें, वीनस की मूर्ति को सजीव करता हुआ नितम्ब···ऐसा लग रहा था कि वह वात्स्यायन के कामशास्त्र की उत्तेजित अभिसारिका की जीती-जागती तस्वीर हो।

वो कैबरे नृत्य के खास अंदाज में पीछे हटती हुई मंच से चली गई। थियेटर हाल दर्शकों की तालियों से गूंज उठा। तालियों के बीच एक-दो दर्शकों ने सीटी बजाई और आवाज लगाई—'हाय, जालिम ने मार डाला !' और सब लोग हंस पड़े।

सूमी तालियों की गड़गड़ाहट में मंच से सीधे अपने मेकअप रूम में आ

गई। उसकी तरफ बहुत-से लोगों ने आने की चेष्टा की, परन्तु दरबान ने रोक दिया। थियेटर का मैनेजर बहुत ही प्रसन्न मुद्रा में लूसी के पास आ कर बोला—

'आज तो आपने कमाल कर दिया।'

'कल भी आपने यही कहा था।'

'तो झूठ थोड़े ही कहा था। अगर आप सारी रात डांस करें तो लोग सारी रात बैठे रहेंगे। एक भी अपनी कुर्सी से नहीं हिलेगा।'

'और इसके बाद मुझे अस्पताल जाना पड़ा तो अकेली ही जाऊंगी। कोई साथ नहीं जाएगा।'

मैनेजर कुछ और कहना चाहता था पर लूसी ने बात काटते हुए कहा, 'गुडनाइट' और मैनेजर को न चाहते हुए भी वहां से जाना पड़ा। दर्शक वहां से चले गए थे, लेकिन फिर भी दो-चार आदमी इस लालच में कि उन्हें शायद लूसी से कुछ बातें करने का अवसर मिल जाए, अब भी खड़े थे। लूसी ने अपना मेकअप उतारा और नाइलोन की एक साधारण-सी साड़ी पहनकर घर जाने के लिए मेकअप रूम से बाहर आई। बाहर आते ही एक सज्जन जो लगभग पचास वर्ष के थे और पूरी सजधज के साथ बढ़िया सूट पहने हुए थे एकदम आगे बढ़े और बोले—

'गुड इवनिंग मिस लूसी! मैंने आपका डांस देखा, वंडरफुल, वंडरफुल···'

लूसी ने व्यंगात्मक ढंग से कहा 'और वंडरफुल···'

'आई एम पीटर। यह मेरा कार्ड है। मैं आपको यह गुलदस्ता पेश करना चाहता हूं।'

'आप यह कार्ड अपने पास रखिए और यह गुलदस्ता वहां रख दीजिए।'

'लूसी, हम तो आपका डांस देखने रोज आएगा।'

'थैंक यू'

'मैं क्या कहूं मिस लूसी···'

और लूसी ने बात काटते हुए कहा—'आपको कुछ कहने की जरूरत नहीं। मैं सब समझती हूं। अच्छा गुडनाइट मिस्टर पीटर।'

और वो आगे बढ़ गई और मिस्टर पीटर वहीं खिसियाने से खड़े रहे।

लूसी थियेटर के बाहर आ गई और दरबान उसके लिए टैक्सी लेने दौड़ा। इतने में एक साहब जिनकी सफेद दाढ़ी यह बता रही थी कि उनकी आयु लगभग साठ वर्ष है, सफेद कुर्ता-पजामा पहने हुए, हाथ में छड़ी, और जिन्होंने अपने गंजे सिर को टोपी में ढका हुआ था, एकाएक लूसी के पास आए और अपने एक खास अंदाज और लहजे में बोले—

'अदा व अर्ज।'

'अदा व अर्ज।'

'खुदा कसम, जैसा सुना था वैसा ही पाया। आप तो बहुत ऊंचे दर्जे की फनकार हैं। मैंने बहुत नाच देखे हैं लेकिन···।'

'लेकिन मेरा जैसा नाच आपने अभी तक नहीं देखा···' लूसी ने बात काटते हुए कहा।

'आपने तो मिस लूसी मेरे मुंह में अलफाज छीन लिए। आपके हुनर की और हुस्न की जितनी तारीफ की जाए थोड़ी है।'

'तारीफ तो आप मेरे हुस्न की करना चाहते हैं। हुनर को बीच में क्यों घसीट रहे हैं। अच्छा खुदा हाफिज।'

टैक्सी आ गई और लूसी टैक्सी में बैठकर चली गई। पीटर, ईमान अली और कुछ लोग जब तक टैक्सी दिखाई दी देखते रहे।

लूसी घर पहुंच गई। कालका जी में एक छोटा-सा घर। सिर्फ दो कमरे और रसोई। ड्राइंगरूम में सोफासेट, दीवान और कुछ इसी तरह की चीजें जो साधारणतौर के ड्राइंगरूम में होती हैं और उसके दूसरे कोने में डाइनिंग टेबिल, पर्दे इत्यादि तो थे ही। घर में जरूरत की सब चीजें, लेकिन ऐश्वर्य की कोई वस्तु नहीं। इन चीजों में से कोई भी वस्तु इस बात की गवाही नहीं देती थी कि उन पर फिजूलखर्ची की गई है। सभी वस्तुएं, सभी सामान तड़क-भड़क और ग्लैमर से दूर। घर देखकर यह अनुमान लगाना कठिन था कि यह किसी कैबरे डांसर का घर है। ऐसा प्रतीत होता था कि यह कोई समाजसेविका या स्कूल-टीचर का निवास-स्थान हो।

इस दो कमरे के घर में केवल दो प्राणी। लूसी और उसकी नौकरानी लक्ष्मी। अब लक्ष्मी को उसकी नौकरानी कहना तो उचित नहीं होगा, सबसे पहले उसका संबंध लूसी से इसी रिश्ते से हुआ था। धीरे-

नौकरानी से उसकी सब कुछ हो गई। वो उसकी सहेली, उसकी मित्र, उस की शुभचिंतक, बल्कि यह कहें कि लक्ष्मी के अतिरिक्त लूसी का इस संसार में कोई था ही नहीं जिसे वह अपना कह सके।

लक्ष्मी ने दरवाज़ा खोला और लूसी कुछ लड़खड़ाती हुई, डगमगाती हुई सोफे पर बैठ गई, बल्कि लुढ़क गई। वो थकी-थकी-सी थी। उस भटके हुए राही की तरह जो मंज़िल ढूंढते-ढूंढते थक गया हो। उस जुआरी की तरह, जो अपना सब कुछ हार चुका हो। कुछ देर पहले जिससे कामुकता, उत्तेजना और वासना की किरणें फूट रही थीं इस समय कितनी टूटी हुई और बिखरी हुई थी। मस्ती बिखेरने वाली, बहार लाने वाली स्वयं एक पतझड़ थी। जिसका एक कटाक्ष दर्शकों में हलचल पैदा कर देता है, जिसकी हर अदा बिजली गिराती है, जिसकी एक मुस्कराहट बेबस कर देती है, जिसका रूप और सौंदर्य दर्शकों को पागल कर देता है, वो इस समय एक दीन-हीन अबला-सी लग रही थी। वो उस दरिया की सतह की तरह शांत नज़र आती थी, जिसके नीचे अनगिनत लहरें प्रतिक्षण आती, उमड़तीं और गिरतीं हैं। वो उस पर्वत की तरह थी जो ऊपर से खामोश नज़र आता है लेकिन जिसके अन्दर ज्वालामुखी धधकता है। वो फूल के उस पौधे की तरह थी जो अपने सीने में कांटों की चुभन सहन करते हुए फूल को अपने सिर पर थामे रहता है। और लोग फूल की मुस्कान देखते हैं, उसकी सुगंध सूंघते हैं लेकिन उसके कांटे कोई नहीं बटोरता।

लक्ष्मी ने लूसी के पास आकर कहा—'क्या आज फिर रो रही हो!'

'नहीं-नहीं, मैं नहीं रोऊंगी। मैं हंसूंगी, मुस्कराऊंगी, यह आंसू तो फिजूल हैं। इनकी कोई कीमत नहीं। आंसुओं का कोई खरीदार नहीं। इन आंसुओं का कोई मूल्य नहीं। बिकती है तो औरत की मुस्कराहट। उसकी मुस्कराहट पर लोग मर मिटते हैं। बढ़-चढ़कर बोली लगाते हैं। मेरी मुस्कराहट भी कीमती है। मेरी मुस्कराहट भी बिकती है। मेरी मुस्कराहट लोगों के दिलों में एक तूफान पैदा करती है, और उसी तूफान से में पैसे बटोरती हूं। दर्शकों की कमज़ोरी से लाभ उठाती हूं।'

'भगवान का दिया आपके पास सब कुछ है। सब तरह का आराम है। पैसा है।'

'भगवान ने मुझे पैसा दिया है और जिसे भगवान पैसा दे उसे, लक्ष्मी, और क्या चाहिए ! क्योंकि पैसा दुनिया में सब कुछ हासिल कर सकता है, सब कुछ खरीद सकता है, आदमी को, औरत को, इंसान को, देवता को और शायद भगवान को भी।'

'मेरी समझ में तो आपकी यह बातें नही आती।'

लूसी ने हाथ का इशारा करते हुए लक्ष्मी से कहा—ह्विस्की और सोडा। लक्ष्मी ने ह्विस्की की बोतल और सोडा लूसी के सामने मेज़ पर रख दिया और बोली—

'ज्यादा शराब नही पीनी चाहिए। शराब कलेजा जला देती है।'

'जो पहले ही जल रही हो उसे यह क्या जलाएगी !'

लूसी ने ह्विस्की की बोतल में से अपने सामने रखे हुए गिलास में शराब डाली, और फिर उसने सोडे की बोतल खोली। सोडे की बोतल में एकदम उफान उठा और उसने अपना हाथ रखकर दबा दिया। काश वो अपने अन्दर उठते हुए उफान को भी इसी तरह दबा सकती। वो प्रयत्न तो रोज़ यही करती थी कि अपनी अन्दर के ज्वालामुखी की आग को शराब से बुझा दे, अपने दर्द को शराब में बहा दे, अपनी पीड़ा को शराब में डुबो दे, अपनी पुरानी यादों को शराब में भुला दे, अपने दिल में चुभते हुए कांटों को शराब में गला दे। शराब थोड़ी देर के लिए उसे मदहोश कर देती और उसके बाद वही दर्द, वही पीडा, वही टीस और वही चुभन। कुछ देर के बाद लक्ष्मी ने मेज़ पर खाना रख दिया। लूसी ने नशे में लड़खड़ाते शब्दों में लक्ष्मी से कहा—'तुम सो जाओ, मैं खाना खा लूंगी।'

वो कब तक पीती रही, कब उसने खाना खाया और वह कब सो गई उसे स्वयं भी मालूम नही हुआ।

एक रात और बीत गई। न जाने कितनों को कितने तरह के सपने दिखाकर न जाने कितने दिलों में नए सपने जगाकर, अब उसके बाद आया सुहावना प्रभात। लोगों के लिए एक नया संदेश और नई आशा लेकर। एक नया उल्लास और उजाला व चमक लेकर। लेकिन लूसी नही उठी। वो बहुत देर तक सोती रही। रात को कुछ ज्यादा पी गई थी। लक्ष्मी ने आकर उसे जगाया और वो अलसाई हुई अंगड़ाई लेती हुई यह कहती

उठी—'ज़िन्दगी का एक दिन और कट गया।'

लूसी ने उठकर स्नान आदि किया और नौ बजे नाश्ता करके तैयार हो गई, वह सोचने लगी कि मैं जिऊं भी तो क्यों जिऊं और मरूं तो क्यों मरूं ! लक्ष्मी ने मेज़ पर पत्रों का एक बंडल लाकर रख दिया और कहा—यह पचास चिट्ठियां आई हैं।

'पचास !'

'जी हां, पचास। इन्हें पढ़ लीजिए।'

लूसी ने इन पत्रों को हाथ से इस तरह एक तरफ कर दिया जैसे यह कोई रद्दी कागज के फटे टुकड़े हों।

लक्ष्मी ने कहा—'इन्हें आप पढ़ेंगी नहीं ?'

'मुझे मालम है इनमें क्या लिखा है। यह पचास चिट्ठियां पचास आदमियों ने लिखी हैं, पचास जगह से आई हैं, लेकिन इन सबका एक ही मजबून होगा, इन सबमें एक ही बात लिखी होगी : मेरी तिरछी नजर पानी में आग लगा देती है। मेरी मुस्कराहट कयामत ला देती है। मेरी हर अदा बिजली गिराती है।' यह कहकर उसने एक व्यंगात्मक कहकहा लगाया और बोली, 'लक्ष्मी, यह सब भंवरे हैं जो फूल के रस के प्यासे हैं, रस चूस कर उड़ जाना चाहते हैं।'

लक्ष्मी ने इसके बाद उसे एक पत्रिका दिखाई, जिसमें उसके नाच का विज्ञापन था। उसे देखकर लूसी ने कहा—'जानती हो लक्ष्मी, यह मेरी खूबसूरती का इश्तहार है, मेरी अपनी नुमाइश है। मेरी नीलामी का डंका है।'

दरवाज़े पर दस्तक हुई। लक्ष्मी ने दरवाज़ा खोला। दरवाज़े पर थे मिस्टर पीटर। मिस्टर पीटर जो लूसी का नाच देखने के बाद फूलों का गुल-दस्ता लेकर उसके पास आये थे। मिस्टर पीटर जो अपना कार्ड भी लूसी को दे गये थे, इस आशा में कि शायद वो कभी उन्हें टेलीफोन कर दे। मिस्टर पीटर जो थियेटर में ही खड़े रहे जब तक लूसी घर नहीं चली गई थी। मिस्टर पीटर बढ़िया सूट पहने हुए थे, और सिर पर थी फेल्ट हैट। अपनी कार में आये थे। लक्ष्मी को देखकर उन्होंने अपनी फेल्ट हैट उतार कर हाथ में ली और बोले—'गुडमार्निंग यानी कि नमस्ते !'

'क्या मिस लूसी घर पर हैं ?'

'हां हैं, लेकिन वो इस समय किसी से नही मिलेंगी।'

'वंडरफुल, मेरा मतलव है वो कव मिलेंगी, कहां मिलेंगी, कैसे मिलेंगी, यानि कि ह्वेन एंड ह्वेयर···'

'आप उनमे थियेटर में मिलिये।'

'हम मिस लूसी का डांस लखनऊ मे कराना मांगता है।'

लूसी ने अन्दर से आवाज लगाई—'लक्ष्मी, इन्हें ड्राइंगरूम मे लाकर बिठा दो।'

लक्ष्मी ने मिस्टर पीटर को ड्राइंगरूम में लाकर बिठा दिया। मिस्टर पीटर ड्राइंगरूम को बडी जांच-पड़ताल की नजरों से देखने लगे और फिर लक्ष्मी से कहा—

'आप उनकी प्राइवेट सेक्रेट्री हैं ?'

'क्या मतलव ?'

'मेरा मतलव है आप उनके प्राइवेट मामलों को सीक्रेट रखती है और उनके सीक्रेट मामलो को प्राइवेट।'

'मेरी कोई सीक्रेट नही है और न ही कुछ प्राइवेट है। मेरे पास जो कुछ भी है, मैं उसकी नुमाइश करती हू।' यह कहते हुए लूसी ने ड्राइंगरूम मे प्रवेश किया।

मिस्टर पीटर एकदम उठकर खड़े हो गये और हंसकर वोले—

'गुडमार्निंग मिस लूसी।'

'गुडमार्निंग।'

'मेरा नाम पीटर है और मैंने कल रात आपका डांस देखा था।'

'जनाव ने उसके वाद रात-रात मे मेरे घर का भी पता लगा लिया! और ऐसा लगता है कि जनाव को रात मे नींद भी नहीं आई होगी, तभी तो यहां सवेरे ही आ पहुंचे हैं।'

'आपका नाच मिस लूसी वंडरफूल, वंडरफूल····'

'और वंडरफूल'—लूसी ने उसका वाक्य पूरा किया।

'आप नाच के वाद मुझसे मिले भी थे!'

'जी हां, लेकिन आपसे वातचीत नही हो सकी थी।'

'अच्छा तो आप यहां बातचीत करने आये हैं !' लूसी ने व्यंग कसते हुए कहा।

'मैं आपका कैबरे लखनऊ में करवाना चाहता हूं। क्या आप वहां चलेंगी ?'

'मैं हर जगह जा सकती हूं, मुझे मेरी कीमत मिलनी चाहिए।'

'मैं वहां तीन दिन आपका डांस करवाना चाहता हूं, आप क्या लेंगी ?'

'तीन हज़ार। आने-जाने का किराया हवाई जहाज का, और ठहरने का प्रबन्ध मेरा और लक्ष्मी का किसी बढ़िया होटल में करना होगा, धर्मशाला में नहीं।'

मिस्टर पीटर एकदम चौंककर बोले, 'धर्मशाला···नो, नो,' और फिर कुछ गिड़गिड़ाते हुए कहा—'कुछ कम कर दीजिए। दुनिया में पैसा ही सब कुछ नहीं होता।'

लूसी क्रोध में एकदम खड़ी हो गई।

'गलत। पैसा ही दुनिया में सब कुछ है। मैं पैसे के लिए ही नाचती हूं और लोग पैसे के लिये ही नचाना चाहते हैं।'

'दो हज़ार ले लीजिए, मिस लूसी।'

'जी नहीं।'

'एक बात कहूं मिस लूसी अगर आप माइंड न करें।'

'मैं हर तरह के आदमी से हर तरह की बातें सुनने की आदी हूं।'

'मेरा मतलब है, उस दिन आपका नाच बहुत बढ़िया था। बहुत ही वंडरफूल। लेकिन आपकी टांगों पर, आई मीन, मेरा म···त···ल···ब ···है···'

'मैं आपका मतलब समझती हूं। आपका मतलब है मेरी टांगें जरूरत से ज्यादा ढकी हुई थीं।'

मिस्टर पीटर यह सुनकर एकदम उछल पड़े। मानो प्यासे को पानी मिल गया हो। उन्होंने एक अर्थपूर्ण दृष्टि फेंकते हुए कहा—'आप तो जानती हैं···'

'···मैं सब जानती हूं। सब समझती हूं, मिस्टर पीटर। एड़ियों के ऊपर ५० रुपये फी इंच और घुटनों के ऊपर १०० रुपये प्रति इंच के

हिसाब से कपड़ा कम होता जायेगा। कहिए मंजूर है, आपको ?'

मिस्टर पीटर लूसी का यह उत्तर सुनकर सकपका गये और अपने आप को संभालते हुए कुछ क्षण बाद मछली पकड़ने के लिए जाल फेंकते हुए अन्दाज-मे बोले, 'मैं एक फिल्म भी बना रहा हूं।'

'आप तो अनुभवी शिकारी मालूम होते हैं। आपको यह जाल फेंकना भी आता है।'

'मैं सच कहता हूं। मैंने फैसला कर लिया है कि मैं अपनी फिल्म में आपको हीरोइन बनाऊंगा।'

'यह फैसला आपने कब किया ?'

'कल रात आपका नाच देखने के बाद।'

'कितनी फिल्मे बनाई हैं आपने।'

'है तो पहली फिल्म, लेकिन मैं ऐसी फिल्म बनाऊंगा, ऐसी फिल्म बनाऊंगा कि···'

'मुझे सब मालूम है, पहले आप मुझे अपनी कहानी सुनायेंगे, फिर किसी होटल मे फिल्म के प्वाइन्ट्स डिस्कस करने के लिए बुलायेंगे, इसके बाद आप मुझे फिल्म यूनिट के साथ पिकनिक पर ले जायेंगे, फिर अपने किसी दोस्त कैमरामैन को बुलाकर मेरी तस्वीरें खिचवायेंगे और फिर फिल्म की हीरोइन बनने के लालच मे आप मुझे अपने बिस्तर पर सोने के लिए कहेंगे, इसके बाद आपकी फिल्म पूरी हो जायेगी।'—लूसी ने एक ही स्वर मे यह सब कह डाला।

पीटर एकदम झेंप गये। उनका सुन्दर सपना टूट गया। उन्हें लगा, जैसे उनके जाल मे मछली की जगह सांप आ गया हो। उन्होंने सामने मेज पर रखा हुआ अपना फेल्ट हैट उठाया और जाने के लिए खड़े होकर बोले—

'आप मुझे गलत समझ रही है।'

'मैं तो आपको ठीक समझ रही हू, लेकिन आप मुझे गलत समझ रहे हैं। आप जा सकते है।'

मिस्टर पीटर ने सिर पर फेल्ट हैट पहना और बाहर के दरवाज़े की ओर चल दिये। दरवाज़े पर ज़रा रुके और फिर पलटकर इस आशा में

देखा कि शायद पासा पलट जाये और फिर चलते-चलते वो बोले—

'सब आदमी एक तरह के नहीं होते हैं।'

'लेकिन, मेरा अभी तक एक ही तरह के आदमियों से पाला पड़ा है। अच्छा, गुडनाइट मिस्टर पीटर।'—लूसी ने उत्तर दिया।

पीटर ने कुछ इस तरह से गुडनाइट कहकर जैसे किसी खिलौने से चाबी देकर आवाज निकाली गई हो, चल दिये।

लूसी के होठों पर एक मुस्कान आ गई और वो मन ही मन में सोचने लगी कि औरत को साथ लेकर चलने में आदमियों की एक ही मंजिल होती है, सिर्फ रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं। डाक्टर, वकील, मास्टर, इंजीनियर, नेता, राजनीतिज्ञ, कलाकार, व्यापारी, समाज-सुधारक, कोई भी हो, औरत के साथ एक ही संबंध रखना चाहते हैं, उससे एक ही रिश्ता कायम करना चाहते हैं। उसके सम्मुख आते ही वो अपने कवच, आवरण और मुखौटे उतार फेंकते हैं और संजी-संवरी सुन्दर स्त्री को निर्वस्त्र देखना चाहते हैं।

लूसी सोच रही थी कि पीटर मुझे बेवकूफ बनाने चला था। मैंने अब बहुत पीटर देख लिये हैं। मैं अब इन आदमियों को अच्छी तरह जान गई हूं, मैं इनकी नजरें पहचानती हूं, इनकी बातों का मतलब खूब समझती हूं, इनके इरादे भांप सकती हूं, इन सबका मकसद ताड़ सकती हूं। अब मैं वो लता नहीं जो इनकी बातों में आ जायेगी, इनके फंदे में फंस जाये, इनके जाल में अटक जाये, जिसे यह धोखा दे सकें, जिसके साथ विश्वासघात कर सकें। लता अब लूसी हो गई है'''लूसी।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। लूसी ने लक्ष्मी को आवाज़ दी और कहा—'लगता है एक और पीटर आ गया है। लक्ष्मी ने दरवाज़ा खोला और देखा कि एक नवयुवक खड़ा है। अचानक आने वाला आगन्तुक गोरा, सुडौल और आकर्षक व्यक्तित्व का युवक था। बुशर्ट और पेंट पहने हुए थे। वस्त्र भड़कीले नहीं परन्तु उम्दा और अच्छे सिले हुए थे। आधुनिक भाषा में हम उसे स्मार्ट कह सकते हैं। शकल-सूरत में पढ़ा-लिखा और सभ्य दिखाई देता था। उसने लक्ष्मी को हाथ जोड़कर नमस्ते की और पूछा—

'क्या मिस लूसी घर पर ही हैं ?'

'हां हैं। लेकिन, वो इस समय किसी से नहीं मिलेंगी।'

'मैं तो उनसे मिलने आया हूं और मिलकर ही जाऊंगा।' उसकी आवाज में विनम्रता थी, परन्तु दृढ़ता भी।

'आप ठहरिये।'

यह कहकर लक्ष्मी ने लूसी को बताया कि कोई युवक आया है और वो कहता है कि—'मैं मिलकर ही जाऊंगा।' लूसी ने लक्ष्मी को उसे अन्दर लाने के लिए कहा। लक्ष्मी ने उसे बैठक में बिठा दिया। लूसी के आने पर वो खड़ा हो गया और उसने हाथ जोड़कर नमस्ते की। लूसी ने जवाब में कहा—

'नमस्ते। आप मुझसे मिलना चाहते हैं! तो ठीक है, मिलिये और चले जाइये।'

'विश्वास रखिये मिस लूसी मैं यहां ठहरने के लिए नहीं आया हूं। मेरा नाम अनिल कुमार है। मैं पत्रकार हूं। मैं यहां की एक प्रसिद्ध पत्रिका का रिपोर्टर हूं।'

'तो बैठिये मिस्टर अनिल।' लूसी ने बैठते हुए कहा।

'मैंने आपका नाच देखा है।'

'मुझे मालूम है।'

'वो कैसे ?'

'अधिकतर लोग मेरा नाच देखने के बाद ही मुझसे मिलने आते हैं।'

'ओह…'

'मैं यह भी जानती हूं कि आप क्या कहना चाहते हैं।'

'क्या मतलब ?'

'आप यही कहने आये हैं कि आपका नाच तो बहुत ही बढ़िया था। आज तक मैंने ऐसा नाच नहीं देखा। आपके पास वो कला है कि बस क्या कहूं, और उसके बाद आप कहेंगे, दिल छीन लेने वाली मिस लूसी, आपकी आंखें तो हिरनी की आंखों की तरह हैं। आपके होंठ खिले फूल की पंखड़ियों की तरह हैं। इसके बाद आप मेरी फोटो कहीं छपवायेंगे और इस तरह

मेरे नजदीक आने की कोशिश करेंगे। इतने नजदीक कि आपके और मेरे जिस्म थोड़ी देर के लिए एक हो जायें। मैं जानती हूं कि पुरुषों की स्त्री के साथ एक ही मंजिल होती है, सिर्फ रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं।'—लूसी ने यह सब एक मनोवैज्ञानिक की तरह कह दिया।

'आप मुझे गलत समझी हैं। मैं न तो आपके साथ चलना चाहता हूं और न ही मेरी वो मंजिल है। मैं चाहूं तो अच्छी से अच्छी लड़की से विवाह कर सकता हूं। मैं यह कहने नहीं आया हूं, जिसकी आपने भविष्य-वाणी की है।'

'तो आप क्या कहना चाहते हैं?' लक्ष्मी ने प्रश्नसूचक शब्दों में कहा।

'सच पूछिये, तो मैं यह कहने आया हूं कि मुझे आपका नाच बिल्कुल पसन्द नहीं आया। बाकी रही कला की बात सो आपके नृत्य में कला का कोई स्थान नहीं है, आपका नृत्य तो केवल जिस्म ही की नुमाइश है। एक वासना-उत्तेजक व्यायाम है।'

'लोग तो यही चाहते हैं।'—लूसी ने किसी बचाव पक्ष के वकील की तरह दलील दी।

'लोग तो आपसे बहुत कुछ चाहते हैं। क्या आप सबको अपना सब कुछ दे देंगी या दे सकेंगी?'

यह सुनकर लूसी के शरीर में एक सिहरन उठी और एक कंपकंपी-सी आ गई और वो एक घायल की तरह चिल्लाई—'बस कीजिए, मिस्टर अनिल। प्लीज स्टाप इट! आप पहले आदमी हैं जिसने मुझे यह कहने की हिम्मत की है।'

'आपका असली रूप तो यही है ना! सचाई कड़वी होती है।'

लूसी और न सहन कर सकती थी और नहीं सुन सकती थी। एकदम बोली—'क्या आप शराब पियेंगे?'

'नहीं। आपको शराब पीना अच्छा लगता है मिस लूसी?'

'और आपको क्या बुरा लगता है, मिस्टर अनिल?'

'मैं अपनी पत्रिका में आपकी एक इंटरव्यू छापना चाहता हूं।'

'उससे क्या होगा?'

'आपके नाच की कीमत बढ़ जायेगी।'

'और इंटरव्यू छापने से आपको भी कुछ पैसा मिल जायेगा। ठीक है न ?'

'आपने यह कैंवरे डांस कब सीखा ?'

'जब मुझे सीखना पड़ा।'

'आपको यह डांस किसने सिखाया ?'

'मेरी परिस्थितियों ने।'

'क्या आपको इस तरह नाचना अच्छा लगता है ?'

'इसमें अच्छे-बुरे का क्या सवाल है ? यह मेरा धंधा है। यह मेरा व्यवसाय है।'—लूसी ने एक लम्बी सांस खींचते हुए कहा।

'क्या आप इससे खुश हैं ?'

'मेरी खुशी से किसीको क्या ? हां, मैं खुशी बांटती हूं, आनन्द लुटाती हूं, लोगों का मन बहलाती हूं।'

'मुझे ऐसा लगता है कि आपकी वो मुस्कराहट, जो दर्शकों के दिलों में धड़कन पैदा करती है, एक दर्द की मुस्कराहट है। आपका अंग-प्रदर्शन एक पीड़ा की ऐंठन है।'

लूसी को लगा कि उसने उसकी दुखती रगों को छेड़ दिया है और वो चिन्ता में उठी—

'मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती। मैं जैसी भी हूं, जो भी हूं, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए। नमस्कार।'

अनिल पर लूसी के क्रोध की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह उसी तरह शांत और विनम्रता से आराम से उठा और हाथ जोड़कर नमस्कार किया और बाहर चला गया।

लूसी ठगी-सी खड़ी रह गई। आज तक उसने केवल अपनी प्रशंसा ही सुनी थी। जो भी उसे मिलता वह उसकी तारीफ ही करता। लोग उसके रूप की, यौवन की, सौंदर्य की सराहना करते थे। उसके कैंवरे डांस को भी कलापूर्ण बतलाते। कोई उसे चौदहवीं का चांद कहता तो कोई उसे आफताब बतलाता। कोई कहता कि उसकी आंखों में उन्माद है तो कोई कहता कि उसकी मुस्कराहट में फूलों की शोखी है। लोग उससे बात करने को तरसते थे। जिससे वह दो बातें कर लेती वो अपने आप को भाग्यशाली समझता।

उसे अभी तक ऐसे ही लोग मिले थे जिनको उसके रूप ने चकाचौंध कर दिया था। जो उसके यौवन को शराब की तरह पी जाना चाहते थे।

अनिल पहला आदमी था, जो न उसके नाच पर और न उसके सौंदर्य पर मुग्ध हुआ था। वह पहला आदमी था जिसकी नज़रों में न वासना की तड़क थी और न कामुकता की झलक। उसने उससे बेधड़क और बेझिझक बात की। लोग उससे बात करते तो कुछ इस तरह बोलते जैसे वो गिड़गिड़ा रहे हों, उससे कुछ मांग रहे हों। लेकिन अनिल ने ऐसे बात की मानो लूसी कोई अपराधी हो। उसकी सच्ची बातों ने उसे झकझोर दिया। उसके घावों को फिर से किसी ने कुरेद दिया। उसकी सोई हुई यादों को फिर से किसी ने जगा दिया। वो छटपटा उठी। वह तड़फ उठी। वो कराह उठी। लक्ष्मी ने शीघ्र ही एक पैग ह्विस्की का तैयार कर उसके हाथ में दे दिया। शराब ही तो उसके दर्द की दवा थी, उसके दुःख-दर्द की साथी थी।

२

एक महीने बाद। कड़ाके की सर्दी पड रही थी। दो-तीन दिन से धूप नही निकली थी। बूदा-बांदी हो रही थी। घर से बाहर वो ही लोग निकलते थे जिनका बाहर जाये बिना काम न चल सके। जितने कपडे कोई पहन सकता, उतने पहन लेता। दस्तानो और गर्म टोपियो की बिक्री बढ गई थी। लोग घरो मे भी हीटर और अंगीठियां जलाकर उसके पास ही बैठे हुए थे। सुबह १२ बजे तक बहुत गहरी धुध रही। मोटरकारें, मोटर-साइकल, स्कूटर इत्यादि धुंध के कारण अपनी बत्तिया जलाकर चल रहे थे। दो-तीन दिन से इस सर्दी के कारण लूसी का नाच नही हुआ था।

दोपहर के चार बजे थे। लूसी भी अपने कमरे मे बिस्तर पर कंबल लेकर लेटी हुई थी और पास ही रखा हुआ था एक हीटर। वह समाचार पत्र पढ रही थी। पढते-पढ़ते उसकी नजर एक खबर पर ठहर गई। वह ध्यानपूर्वक पढ़ने लगी—'कल रात के दस बजे नारायणा के बस-स्टाप से एक नर्स दिल्ली छावनी के लिए बस पर चढी। उस समय बस मे केवल पाच या छः यात्री थे। थोड़ी दूर जाने के बाद सब यात्री उतर गये और वह नर्स इस बस मे अकेली रह गई। कुछ देर के बाद जब नर्स ने यह देखा कि बस गलत रास्ते पर जा रही है तो उसने बस रोकने के लिए कहा। बस और भी तेज चलने लगी। वह चीखी-चिल्लाई, पर वहा उसकी आवाज सुनने वाला कोई नही था। कंडक्टर ने उसके साथ बलात्कार किया और उसे चलती बस से नीचे फेंक दिया। पुलिस इस मामले की बड़ी तत्परता से छानबीन कर रही है।'

लूसी ने पढ़कर समाचार पत्र एक तरफ रख दिया और वह सोचने लगी : मनुष्य समाज ने यह पुरस्कार दिया है एक नर्स को, जो कि उसकी सेवाओं के बदले। नर्स जो घायलो के घाव पर पट्टी बांधती है, जो

बीमारों को दवा पिलाती है, जो रोगियों के दर्द को सहलाती है, जो कराहते हुये लोगों के आंसू पोंछती है और सारी-सारी रात स्वयं जागकर रोगियों की सेवा करती है। उसके साथ आज समाज ने कितना बड़ा जुल्म, कितना बड़ा अन्याय किया है। स्त्री चाहे, नर्स, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, टाइपिस्ट, क्लर्क, टीचर, या कुछ भी हो, मनुष्य समाज उसे केवल स्त्री ही समझता है और स्त्री को मनुष्य केवल एक मनोरंजन का साधन, अपने खेल का खिलौना समझता है। जब तक चाहा खेला और फिर फेंक दिया। मनुष्य उसे अपनी कामुकता और वासना-तृप्ति का एक साधन मानता है। स्त्री वर्ग का इतिहास मनुष्य की क्रूरता का इतिहास है। उसकी बर्बरता का इतिहास है। उसके जुल्म का इतिहास है। मनुष्य तो मनुष्य देवताओं ने भी स्त्री से छल-कपट ही किया है। इन्द्र ने अहिल्या के साथ छल किया और उसका दंड भोगना पड़ा अहिल्या को वर्षों तक पत्थर बनकर।

मनुष्य जिसे देवी कहता है उसके साथ दानव का-सा व्यवहार करता है। अवसर मिलने पर हर मनुष्य दुशासन ही हो जाता है। मनुष्य छल से, कपट से, धोखे से स्त्री को अपने जाल में फंसाकर अपनी वासना का शिकार बनाता है और फिर वही मनुष्य-समाज कहता है कि उसकी मर्यादा खत्म हो गई, उसकी पवित्रता भंग हो गई, उसका सतीत्व नष्ट हो गया। उसे कलंकिनी, दुराचारी और भ्रष्टा की संज्ञा देता है। और स्वयं दूध में नहाया ही रहता है। वह यह नहीं सोचता कि उसे कलंकित किसने किया, उसे दुराचारी किसने बनाया, उसे पथभ्रष्ट किसने किया। उसका सतीत्व किसने नष्ट किया। पुरुष स्त्री को लूटने के बाद, उसे मसलने के बाद भी निरपराधी ही रहता है। उसकी मर्यादा नष्ट नहीं होती, उसकी इज्जत नहीं लुटती, उसके पुरुषत्व को आंच नहीं आती। स्त्री को वेश्या पुरुष ही बनाता है और फिर दिन के उजाले में उसे समाज की गंदगी पुकारता है और रात के अंधेरे में उसे अपने सीने से लगा लेता है। यह कैसी विडम्बना है? यह कैसा विधान है?

यह सोचते-सोचते लूसी अपने अतीत में खो गई। पुरानी यादों में डूब गई। उसके सम्मुख उसके जीवन का इतिहास खुलने लगा। वह घटनाएं और वह परिस्थितियां, जिन्होंने उसे लता से लूसी बना दिया था, एक-एक

करके उसके नेत्रों के सामने चित्रित होने लगी। उसे इस सर्दी में भी गर्मी लगने लगी।

लक्ष्मी ने एक प्याला काफी लाकर सामने मेज पर रख दिया। पर लूसी को पता नही चला। वह तो अपने विचारों में खोई हुई थी। लक्ष्मी ने जब दो बार पुकारकर लूसी को काफी के लिए कहा तो उसने चौंक कर कहा—'क्या है?' 'काफी पी लीजिए,'—लक्ष्मी ने फिर एक बार कहा।

'अब काफी से काम नही चलेगा,'—लूसी ने कुछ संभलते हुए कहा और फिर लक्ष्मी को समझाने लगी। लक्ष्मी ने सब समझने के बाद, सिर हिलाते हुए बोली—'व्हिस्की और सोडा'। लूसी ने केवल सिर हिला दिया। लक्ष्मी ने एक पत्रिका लूसी को दिखाते हुए कहा—'इसमें दीदी, आपकी फोटो छपी है और आपके बारे में बहुत कुछ लिखा है।' लूसी ने वह पत्रिका लक्ष्मी से ले ली और पढने लगी। मिस लूसी कैबरे-डांसर से एक भेंट—भेंटकर्ता अनिल।

'मिस लूसी को नृत्य से कोई लगाव नही। कोई शौक नही। उन्हे तो उनकी मजबूरियों ने, परिस्थितियों ने उन्हें कैबरे-डांसर बना दिया। वह इसलिए नाचती हैं कि उन्हे नाचना पडता है। उनकी मुस्कराहट, जो लोगों को पागल बना देती है, एक दर्द की मुस्कराहट है, उनकी भाव-भंगिमा, जो दर्शकों को मतवाला बना देती है, एक पीडा की ऐंठन है।'

'नानसेंस, ईडियट।'—लूसी ने माथे पर त्योरियां चढ़ाते हुए कहा। और फिर वह अपने नृत्य का फोटो देखने लगी, जो कि उसमे छपा था। फोटो के नीचे लिखा था—'मिस लूसी, जिनके नृत्य मे कला और वस्त्र तो नाम मात्र को ही हैं, लेकिन उत्तेजना और वासना से भरपूर हैं।'

लूसी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने पत्रिका बन्द करके मेज पर पटकते हुए कहा—'अपने आप को क्या समझता है! मैं उसे वह मजा चखाऊंगी कि साला क्या याद रखेगा।'

लूसी एकदम से बिस्तर से उठी और कुछ ढूढने लगी। उसने मेज की दराज देखीं, अपनी ड्रेसिंग टेबिल की दराजें देखीं, और फिर अलमारियां देखने लगी। लक्ष्मी ने पूछा—'दीदी, क्या ढूंढ रही हो? क्या खो गया है?' लूसी ने कहा—'वो जो उस दिन आया था, अपना कार्ड छोड गया था।'

लक्ष्मी ने बताया कि उसने इस तरह के सारे कार्ड एक जगह अलमारी में रखे हुए हैं। लक्ष्मी जल्दी से अपने कमरे में गई और अलमारी में से कार्डों का ढेर उठा लाई। लूसी जल्दी-जल्दी उन्हें पढ़ने लगी और फिर यकायक एक कार्ड पढ़कर बोली—'मिल गया''मिल गया। देख लक्ष्मी, यह रहा उसका कार्ड।'

लूसी ने साड़ी बदली और उसने बाल संवारे। एक दुशाला ओढ़ा और चल दी। लक्ष्मी ने उसे जाते देख कहा—'दीदी, बाहर सर्दी पड़ रही है। इस शाल से काम नहीं चलेगा। मेरी मानो तो आज कहीं मत जाओ। आज बहुत ठंड है।' लूसी ने अपना कोट पहन लिया, जुरावें पहनीं, दस्ताने पहने और यह कहकर कि मैं तो भूल गई थी कि आज बहुत सर्दी है, बाहर चली गई।

उसने टैक्सी रोकी और सीधे अनिल के घर पहुंची। उसने बड़े ज़ोर से घंटी बजाई। अनिल ने भीतर से ही आवाज़ दी—'दरवाज़ा खुला है, चले आओ।' लूसी ने दरवाज़ा खोला और देखा कि अनिल मेज पर बैठा हुआ कुछ लिख रहा है। पास में ही एक हीटर जल रहा है। ड्राइंग रूम बड़े ही करीने से सजा हुआ है। अनिल लूसी को देखकर खड़ा हो गया और उसने लूसी को बैठने के लिए कहा।

'मैं बैठने नहीं आई हूं।'—लूसी ने उत्तर दिया।

'माफ कीजिएगा, मैं भी आपको ज्यादा देर नहीं बिठा सकूंगा, क्योंकि मुझे एक ज़रूरी काम से बाहर जाना है।'

'व्हाट् नानसेंस, मैं जिसकी तरफ मुस्कराकर देखती हूं, वह अपने आपको भाग्यशाली समझता है। जिससे मैं चार बातें कर लेती हूं, वो समझता है कि उसे स्वर्ग मिल गया और एक आप हैं कि...'

'मुझे अभी स्वर्ग नहीं चाहिए। मैं अभी कुछ देर और पृथ्वी पर रहना चाहता हूं।' अनिल ने लूसी की बात काटते हुए कहा।

'आप अजीब आदमी हैं!'

'सिर्फ आपके लिए।'

लूसी ने पत्रिका की उस प्रति को जो अपने साथ लाई थी उसकी मेज पर पटक दिया और फिर कुछ इस तरह, जैसे कि कोई पुलिस अधिकारी

अपराधी से पूछता है, उसने कहा—'मैं पूछती हूं, यह सब क्या है ?'

'आप यह बैठकर भी पूछ सकती हैं।'

'मैं नहीं बैठूंगी।'—लूसी ने एलान करते हुए कहा।

'तो मुझे भी खड़ा ही रहना पड़ेगा।'

'मैं पूछती हूं कि आपने यह सब क्या लिखा है ? इसे जरा पढ़िए।'

'मैंने तो लिखा है, इसलिए मुझे पढ़ने की जरूरत नहीं। आपने पढ़ लिया है ?'

'आपको यह लिखने की क्या जरूरत थी और आपको क्या अधिकार है ?'

'अधिकार की बात छोड़िए। आप यह बताइए कि यह सच है या नहीं।'

'नहीं।'

अनिल थोड़ा-सा हंस दिया और फिर व्यंग करते हुए बोला—'आप सच्चाई से घबराती है। आप वास्तविकता से डरती हैं।'

'आपने लिखा है कि मेरे नृत्य में वस्त्र और कला की कमी होती है, लेकिन···'

अनिल फिर उसे टोकता हुआ बोला—'क्या ये सच नहीं है ? आप अपने दिल से पूछिए। अपना मन टटोलिये और फिर बताइये, क्या यह कला है ? क्या यह हुनर है ?'

लूसी चुप हो गई और कुर्सी पर बैठ गई। कुछ क्षण के बाद उसने फिर प्रश्न किया—'आपने वह फोटो कहां से लिया ?'

'आप जब इस तरह सैकड़ों आदमियों के सामने नाचती हैं, तो कोई भी फोटो ले सकता है।'

'लोग जो चाहते हैं, मैं वही उन्हें देती हूं। वो मेरी हंसी की खिल-खिलाहट सुनना चाहते हैं, वो मेरे शरीर का आकर्षण देखना चाहते हैं। उन्हें मेरे होंठों की लाली और आंखों का कजरा अच्छा लगता है। मैं उन्हें वही देती हूं।'

'मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि इस बहार के नीचे एक ज्वालामुखी है। इस खिले हुए फव्वारे के नीचे बिजली है।'

'यह बताने से क्या होगा ?'

अनिल ने बातचीत का सिलसिला बदलते हुआ कहा—'मेरा नौकर इस समय घर पर नहीं है। अगर आप थोड़ी देर बैठें तो मैं काफी या चाय का प्याला बनाकर लाऊं। काफी या चाय के अलावा बाकी रही ह्विस्की और सोडे की बात, वो तो मेरे घर में नहीं है। न मैं पीता हूं और न ही पिलाता हूं।'

'मैं आपके पास चाय या काफी पीने नहीं आई।'

'आप मेरी मेहमान हैं। पहली बार मेरे घर आई हैं। इतनी खातिर तो करनी ही चाहिए।'

'मैंने तो आपको चाय या काफी नहीं पिलाई थी।'

'वो आपकी मेहमाननवाजी थी।'

लूसी को लगा कि अनिल उसे मात पर मात देता जा रहा है। उसने पूछा—'आपकी शादी हो चुकी है ?'

'जी, नहीं।'

'आप जैसे आदमी से कोई लड़की शादी करेगी भी नहीं।'

'आपने भी शादी नहीं की या यूं कहिए कि आपकी भी शादी नहीं हुई।'

लूसी निरुत्तर हो गई। उसे लगा कि वह बाजी हार गई है। वह तो उसे मजा चखाने आई थी। उसे खरी-खोटी सुनाने आई थी। लेकिन, उसका कोई तीर नहीं चला। उसके तीर तरकश में ही रह गये।

'मैं ज्यादा बहस नहीं करना चाहती। अच्छा अगर आपने मेरे बारे में कुछ भी लिखा तो अच्छा नहीं होगा।' यह कहते हुए वह उठकर एकदम चल दी। दरवाजे के पास आकर उसके मुंह से यह शब्द निकले—'अजीब आदमी है।' उसी समय अनिल ने भी यही कहा—'अजीब औरत है।' कुछ देर यही शब्द वहां के वातावरण में गूंजते रहे।

लूसी ने टैक्सी ली और सीधी घर आ गई। रास्ते में उसके अन्तःकरण में बार-बार यह आवाज उठ रही थी—'वो कहता तो सच है।' घर पहुंचकर उसने घंटी बजाई, लक्ष्मी ने दरवाजा खोला और वो फुर्ती से हवा के झोंके की तरह अपने कमरे में चली गई। दस्ताने उतारकर

फेंक दिये, कोट उतारकर पटक दिया, जुराबें एक झटके से अलग की और बिस्तर पर रजाई ओढ़कर लेट गई। लक्ष्मी को उसकी इन हरकतों से ऐसा लगा कि उसके मन की मन में रह गई और वह अपना-सा मुंह लेकर लौट आई है। उसने जिज्ञासा भरी दृष्टि से उसके उतरे हुए उदास चेहरे को देखा और फिर पूछा—'मिल गया था, अनिल ?'

'मिलता कैसे नहीं।'—लूसी ने उत्तर दिया।

'क्या उसने कुछ कहा ?' लक्ष्मी ने फिर पूछा।

'कहता क्या ! उससे तो कोई जवाब ही नहीं बन पड़ा। मैंने···मैंने उसे वो खरी-खोटी सुनाई कि साला याद करेगा। अपना-सा मुंह लेकर रह गया। मैंने उसकी वो खबर ली और उसको वो फटकारा कि वह भी याद करेगा कि किसी स्त्री से पाला पड़ा था।'—लूसी ने बड़ी फुर्ती से कहा। लेकिन, उसके स्वर में बनावट स्पष्ट नजर आ रही थी। नाटक के संवाद बोलने का अंदाज था। उसकी आवाज में सचाई की गंध नहीं थी।

लक्ष्मी तुरन्त भाप गई कि बात कुछ और हुई है। उसने धीरे से कहा —'कहता तो सच है।' लूसी ने एक ठंडी सांस ली और फिर कहा—'हां, वह सच कहता है, सच कहता है,' और फिर एकदम जोर से चिल्लाई : 'लेकिन, मैं क्या करूं ? मैं क्या करूं ?' कहते-कहते उसके मन की घुटन और दिल की कसक आंसुओं में ढल गई।

३

पन्द्रह दिन बाद । धुंध और बूंदा-बांदी समाप्त हो चुकी थी । सर्दी की हर लौट गई थी । मौसम सुहावना था । जाड़े की सुहावनी धूप घर से बाहर निकलने की दावत दे रही थी । दोपहर को सड़कों और बाज़ार में काफी चहल-पहल थी । क्रिसमस और नववर्ष के आगमन के दिन थे । दुकानें सजी हुई थीं । कनाटप्लेस में एक मेला-सा लगा हुआ था । इन दिनों जनपथ पर काफी हाउस की बगल में एक बाज़ार लगता है, जिसमें क्रिस-मस और नववर्ष के अभिनन्दन पत्र की अनेकों दुकानें होती हैं । यह बाज़ार पूरे जोरों पर था । तिल रखने की जगह नहीं थी । रास्ता चलना बड़ा ही कठिन था । कंधे से कंधा भिड़ता था । कई मनचले नवयुवक तो इस बाजार में इसीलिए आते थे कि सुन्दर नवयुवतियों के साथ कंधे से कंधा मिला सकें । मनचले उनके जिस्म के साथ जिस्म मिलाकर चल सकें । बाज़ार में केवल खरीददार ही नहीं थे, बल्कि ऐसे बहुत-से लोग थे, जो सिर्फ मेला देखने आये थे । बल्कि, यूं कहिए कि पृथ्वी पर जन्नत का नज़ारा देखने या फिर बाजार की चहल-पहल और रौनक का स्वाद चखने आये थे ।

लेकिन, ऐसे अवसरों पर पाकेटमार, चोर और गुंडे भी पीछे नहीं रहते । बल्कि, यह कहना चाहिए कि वो लोग तो ऐसे अवसर की ताक में ही रहते हैं कि उन्हें अपनी हाथ की सफाई दिखाने का मौका मिले, क्योंकि उन्हें अपने हाथ का करिश्मा दिखाने का अवसर ऐसी भीड़-भाड़ में ही मिलता है । इस बाज़ार में, इस मेले में, इस भीड़ में कुछ लोग खरीद रहे थे, कुछ लोग कुछ पा रहे थे और कुछ लोग कुछ खो रहे थे ।

लूसी भी कनाटप्लेस में कुछ खरीददारी करने के लिए आई थी उसने अपने लिए एक साड़ी खरीदी और लक्ष्मी के लिए एक धोती । उस

अपने मेकअप का सामान भी खरीदा। मेकअप जो उसके रूप को निखारता है। जो उसके सौंदर्य को उभारता है। एकाएक उसे ख्याल आया—क्या यह रूप अमर है? क्या उसका सौंदर्य सदा ही ऐसे रहेगा? क्या जो निशान जो वक्त उसके चेहरे पर छोड़ देगा, यह मेकअप का सामान उसे मिटा सकेगा? यह विचार आते ही वह एक उदास धुन की तरह कांप गई और फिर अपने मन को समझाने की कोशिश-सी करते हुए उसने सोचा, अभी से मैं इसकी चिन्ता क्यों करूं? अभी तो मैं जवान हूं। अभी तो मैं इस दुनिया के मेले में अपने आकर्षण की पूरी कीमत वसूल करूं। अपने रूप और सौंदर्य का पूरा लाभ उठाऊं। वह सोचती-सोचती पटरी पर बैठे एक केले वाले से टकराई। परन्तु संभल गई और फिर दिल को तसल्ली देते हुए मन ही मन में उसने कहा—'जो होगा देखा जायेगा।' उसने देखा कि नववर्ष के अभिनन्दन कार्ड खरीदने वालों की बड़ी भीड़ है। लेकिन उसे इसकी आवश्यकता नहीं है। दुनिया में उसका ऐसा कोई नहीं है जिसे वह नववर्ष का अभिनंदन भेजे।

लूसी इस बाजार के पास से होकर कनाटप्लेस के बीच के गार्डन में आ गई। यहां बहुत कम भीड़ थी। मोड़ से थोड़ी दूर पर तीन-चार नवयुवक खड़े थे। उनके सिगरेट पीने का अन्दाज और बातचीत के ढंग से यह प्रकट होता था कि वह उन लोगों में से नहीं हैं जिन्हें हम सभ्य या शरीफ कहते हैं।

'उस्ताद! अरे देखो, यह तो बड़ी फुलझड़ी आ रही है।'—एक ने सीटी बजाकर उछलते हुए कहा।

'इसका तो अखबार में फोटू भी छपा है। क्या फोटू उतरवाई है!' दूसरे ने कहा।

'मैंने तो इसका डांस भी देखा है। क्या नखरे हैं। दिल में छुरियां चल जाती हैं, कलेजा बाहर को आ जाता है।'—तीसरे मनचले ने कहा।

'हम भी तुम्हारे दीवाने हैं। हाय मार डाला ज़ालिम ने।'—चौथे ने अपने दिल पर हाथ रखते हुए कहा।

लूसी ठहर गई और तड़पकर बोली—'क्या तुम्हें शर्म नहीं आती?'

'आपको देखकर तो शर्म आने की बजाय चली जाती है।'—उनमें से एक ने कहा। बाकी सब ज़ोर से ठहाका लगाकर हंस दिये।

लूसी पहले सहमी, डरी और फिर अपने आपको संभालती हुई बोली —'मैंने तुम जैसे बहुत देखे हैं। मैं तुम लोगों को···'

'देखें हैं या चखे हैं ?'—एक ने कहा और बाकी सबने फिर एक ज़ोर का कहकहा लगाया।

शाम का झुटपुटा, अंधेरा हो चला था और आस-पास इन व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई नहीं था। लूसी घबरा गई। अनिल अपनी कार में उधर से जा रहा था। उसने लूसी को देखा और उन बदमाशों के कहकहों को सुना। उसने कार रोक ली और बाहर निकल आया। ऊंचा कद, गोरा-उजला-सुडौल शरीर। अनिल एक प्रभावशाली व्यक्ति था। बदमाश समझे कि कोई बड़ा पुलिस अफसर है। वह कार से उतरते ही उन लोगों की तरफ बढ़ा और फिर बड़े ज़ोर से कड़कती आवाज़ में पूछा—'क्या बात है ? अपने आपको बहुत बड़े बदमाश समझते हो ? मैं अभी तुम्हारी सारी बदमाशी निकाल दूंगा।'

'नहीं, साहब कोई बात नहीं है।'—यह कहकर वह सब लोग वहां से चुपचाप चले गये।

लूसी को 'शुक्रिया' कहना चाहिए था, लेकिन उसने कहा नहीं। वह कह नहीं सकी। वह कुछ सोचती वहीं खड़ी रही। फिर उसने अनिल को एक नज़र देखा और यह नज़र कह रही थी—'अजीब आदमी है।'

अनिल भी कुछ क्षण चुप रहा और फिर बोला—'चलिए, मैं आपको आपके घर छोड़ दूंगा। मैं उधर ही जा रहा हूं।'

'आप क्यों कष्ट करते हैं ?'

'विश्वास रखिए मैं ऐसा कोई काम नहीं करता जिसमें मुझे कष्ट हो।'

अनिल ने अपनी कार का दरवाज़ा खोलते हुए कहा—'बैठ भी जाइए, टैक्सी का किराया दे दीजिएगा।'

लूसी ने कुछ और नहीं कहा। वह कार में बैठ गई। अनिल के पास अगली सीट पर। कार धीमी-धीमी रफ्तार से जा रही थी, लेकिन लूसी के दिल की धड़कन तेज़ थी। लूसी कुछ सोच रही थी। दोनों चुपचाप चले

जा रहे थे। मानों मौनव्रत रहा हो। थोड़ी दूर जाने के बाद एक साइकिल वाले ने एकदम अपनी साइकिल दाईं तरफ मोड दी। अनिल ने जोर का ब्रेक लगाया और ब्रेक लगाते ही लूसी उसके कंधे पर जा गिरी। अनिल ने कहा—'आई एम सॉरी' और इसके उत्तर में लूसी थोड़ा-सा मुस्करा दी। कार फिर चल पड़ी और दोनों फिर चुप हो गये। लूसी के घर के सामने अनिल ने कार रोक दी। लक्ष्मी ने खिड़की में से बाहर को देख लिया था। उसने आकर दरवाजा खोल दिया। लूसी कार से उतर गई और बोली—'थैंक यू!' लक्ष्मी ने अनिल को देखा तो चकित रह गई। लक्ष्मी ने अनिल को नमस्कार किया और अनिल ने भी उत्तर में हाथ जोड़ दिए। लक्ष्मी ने कहा—'आप अन्दर नहीं आयेंगे।'

'मुझे अन्दर बुलाने से पहले अपनी दीदी से पूछ लीजिए।'—अनिल ने लूसी की तरफ देखते हुए कहा।

इससे पहले कि लूसी कुछ कहती, अनिल ने कहा—'इस समय जल्दी में हूं, फिर कभी आऊंगा।' अनिल ने कार स्टार्ट की और फिर चल दिया।

लक्ष्मी ने इन दोनों को साथ देखा तो यह उसके लिए एक पहेली बन गई। वह कुछ उलझन में पड़ गई। वह सोचने लगी। उस दिन तो लूसी कह रही थी कि उसे वो मजा चखाया है कि उम्र भर याद रखेगा। उससे जवाब देते ही नहीं बना।...और आज दोनों कार में एक साथ आये हैं। उसने लूसी से कहा—

'दीदी, आज तुम्हें यह कहां मिल गया?'

'कनाट प्लेस में।'

'तो क्या आपसे वहां माफी मांगने लगा?'

लूसी ने केवल सिर हिलाकर 'हां' कह दिया।

लक्ष्मी ने फिर पूछा—'वो आपको कार में बिठाकर लाया या आप उसकी कार में बैठकर आई है?'

'सब किस्मत की बात है।'—लूसी ने उत्तर दिया और शीशे में अपने आपको देखने लगी। उसने कंघी उठाई और बालों में फेर ली तथा गालों से सटी हुई एक लट को भी ठीक कर लिया। तत्पश्चात् उसने लिपस्टिक उठाई और होंठों पर लगाने लगी। लक्ष्मी ने पूछा—'दीदी, फिर वहां

रही हो क्या ?'

'लो, मैं तो भूल ही गई थी। मैं बाहर थोड़े ही जा रही हूं। मैं तो बाहर से आई हूं।'—कहते हुए लूसी ने लिपस्टिक रख दी और कुर्सी पर बैठकर कुछ गुनगुनाने लगी।

लक्ष्मी की अपनी पहेली और भी जटिल हो गई। वह अब भी सोच रही थी कि आज कुछ अनहोनी घटना हुई है। कब, कहां और कैसे, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

४

आज टैक्सी और स्कूटर वालों की हड़ताल थी। इसका कारण था पहले के मूल्य में वृद्धि। वैसे कारण कुछ भी हो सकता था, क्योंकि उन दिनों हड़ताल करना एक फैशन था। रोज अखबार स्ट्राइक की खबरों से भरे होते। कभी विद्यार्थी हड़ताल करते तो कभी नर्सें, कभी बिजली वाले हड़ताल करते, तो कभी पानी वाले, कभी कार्यालय के क्लर्क और कभी उनके अफसर, तो उनके साथ-साथ बस और ट्रक वाले हड़ताल करते हैं। हड़तालों का जोर था।

कल बस वालों ने हड़ताल की थी और इस हड़ताल का पूरा-पूरा फायदा उठाया टैक्सी और स्कूटर वालों ने। मनमाने पैसे वसूल किये और खूब कमाई की। आज टैक्सी और स्कूटर वालो की हड़ताल थी। हां, बस स्टैंड पर मेला लगा हुआ था। बसों पर लोग लटक रहे थे। कई बस में चढ़ने के असफल प्रयास करते-करते अस्पताल पहुंच गये थे। पैदल जाने वालों की भी काफी भीड़ थी।

लूसी का आज नृत्य था। वह शाम को घर से बाहर निकली तो याद आया कि आज टैक्सी की हड़ताल है। वह सोच रही थी कि क्या करे। वह इसी उधेड़बुन में थी कि अकस्मात अनिल कार में आया और आगे बढ़ गया। जैसे ही उसने लूसी को देखा तो अपनी कार पीछे करते हुए लूसी के सामने लाकर खड़ी कर दी।

'नमस्ते, मिस लूसी!'

'नमस्ते।'

'आप कहां जा रही हैं?'

'आप कहां जा रहे हैं?'

'पहले आप बताइये, लेडीज फर्स्ट।'

'आप जाइये मैं चली जाऊंगी।'

'आज आप नहीं जा सकेंगी। आज आपको कोई टैक्सी नहीं मिलेगी, और बस में चढ़ना आपके बस की बात नहीं। आपको अर्चना थियेटर पहुंचना है ?'

लूसी ने केवल सिर हिलाकर हां कह दिया।

'तो बैठिये। टैक्सी का किराया दे दीजिएगा सिर्फ···बैठिए भी !'

अनिल ने दरवाज़ा खोल दिया और लूसी चुपचाप कार में बैठ गई। लूसी ने पूछा—'क्या आप उधर ही जा रहे थे ?'

'नहीं।'

'तो फिर आपने बेकार में कष्ट किया।'

'मैंने पहले भी आपसे कहा था कि मैं कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे मुझे कष्ट हो।'

फिर थोड़ा रुककर अनिल ने कहा—'अगर आज टैक्सी की हड़ताल न होती, और आप मुझे कहतीं कि थियेटर छोड़ आओ तो भी मैं आउट आफ़ दि वे नहीं जाता।'

'थैंक यू।'

और फिर दोनों चुप हो गये। कार जा रही थी, यकायक एक आदमी सड़क पार करने के लिए बिना देखे सड़क के इस तरफ से उस तरफ भागा। वह एकदम कार के सामने आ गया। अनिल ने ज़ोर से ब्रेक लगाया। पहियों के रुकने की ज़ोर से आवाज़ हुई और उसके साथ ही लूसी के मुंह से यह शब्द निकले—'ओह! ईडियट, कैसे बेवकूफ लोग हैं। सड़क पार करते हैं और इधर-उधर नहीं देखते।'

अनिल सिर्फ मुस्करा दिया।

'मेरा दिल अभी तक कांप रहा है।'—लूसी ने कहा।

'आप अपना दिल ठीक कर लीजिए, फिर आगे चलेंगे।'—अनिल ने कार रोक दी।

'ठीक हो गया।'

कार फिर आगे चल दी। दोनों चुपचाप थे। शायद अपनी-अपनी कल्पना की उड़ान में खोये हुए थे या अपने विचारों की उलझनों में। एक

को यह नहीं मालूम था कि दूसरे के दिल में क्या है। लेकिन दोनों के मन में कुछ हलचल थी। दोनों के दिलों की धड़कन साधारण नहीं थी। कभी-कभी दोनों एक दूसरे को चोरी से देख लेते। लूसी के दिमाग में यह शब्द प्रतिध्वनित हो रहे थे कि—'अजीब आदमी है' और अनिल के दिमाग में—'अजीब औरत है।'

थोड़ी दूर जाने के पश्चात वह लोग एक चौराहे पर आ गये। चौराहे के एक तरफ से एक बस आ रही थी। अनिल ने ब्रेक लगाई, लेकिन उसकी ब्रेक टूट गई। उसके मुंह से एक चीख निकली और कार इधर से उधर लड़खड़ाने लगी। लूसी भी चिल्ला उठी। एक ज़ोर का धमाका हुआ और कार बिजली के खम्भे से टकरा गई। लूसी कार की खिड़की से बाहर जा गिरी। उसके हाथ-पैर पर कुछ चोट आई। लोग दौड़कर इधर-उधर से आ गये। उधर से जाते हुए लोग रुक गये। उसके आसपास एक भीड़ जमा हो गई। दो-चार आदमी लूसी को पकड़कर उठाने लगे, लेकिन उसने यह कह कर कि 'मैं ठीक हूं, सबको अलग कर दिया। लूसी ने देखा कि अनिल स्टेरिंग ह्वील पर सर रखे पड़ा है। उसने अनिल को आवाज़ दी, लेकिन अनिल ने कोई उत्तर नहीं दिया। बेहोश था। ऐसा मालूम होता था कि उसके सिर पर चोट आई है। उसकी बाह में शीशे का एक टुकड़ा आकर लग गया और उसमें से खून बह रहा था। लूसी बहुत घबरा गई। वह बोली—'इन्हें अस्पताल ले जाना चाहिए।' एक आदमी जो वहां खड़ा था, वह बोला—'इन्हें मेरी कार में लिटा दीजिए।' मैं इन दोनों को अस्पताल ले जाता हूं।' कार की पिछली सीट पर अनिल को लिटा दिया गया। भीड़ में से एक आदमी बोला—'देखिए, बहन जी इनका सिर थोड़ा-सा उठा लीजिए। आप भी पीछे बैठ जाइए और इनका सिर अपनी गोद में रख लीजिए।' एक और बोला—'हां, इस तरह ठीक रहेगा।' लूसी कार की पिछली सीट पर बैठ गई और उसने अनिल का सिर अपनी गोद में रख लिया। कार चल पड़ी और फिर थोड़ी ही देर में अस्पताल पहुंच गई। लान में बैठे कुछ लोग रो रहे थे। उनका कोई रिश्तेदार, कोई [illegible] दुनिया से चल बसा था। कार कैजुअलटी वार्ड के पास रुकी। [illegible] ने कहा—'स्ट्रेचर लाओ।' अस्पताल के दो कर्मचारी

फिर अनिल को उसपर लिटाकर कैजुअलटी वार्ड के अन्दर ले गये। अनिल अब भी वेहोश था।

यहां पर लोगों की काफी भीड़ थी। कुछ घंटे पहले बस का एक्सीडेन्ट हो गया था, जिसमें पन्द्रह-वीस आदमी घायल हुए थे। यह भीड़ घायलों के संबंधियों की थी। लूसी ने इस तरह की भीड़ पहली वार देखी थी। उसने तो अभी तक थियेटर में अपने नाच देखने वालों की भीड़ देखी थी, जिसमें शाम को लोग अपने अच्छे से अच्छे कपड़े पहनकर आते थे। जिनके चेहरे से मादकता, मस्ती और खुशी झलकती थी। जिनकी आंखों में वासना लहराती, जिनके होंठों पर एक प्यास थिरकती, जो उसे देखते, घूरते और फिर किसी आनन्द की कल्पना करते हुए मदहोश हो जाते। उन्हें देखकर मालूम होता कि संसार में किसी को कोई दुख नहीं है, कोई कष्ट नहीं है। यह संसार एक मौज-मस्ती का मेला है।

यह भीड़ उससे बिल्कुल भिन्न थी। वाल विखरे हुए, कपड़े अस्त-व्यस्त। चेहरे पर चिन्ता और व्याकुलता की रेखाएं। कुछ आंसू वहा रहे थे। इन्हें देखकर मालूम होता था कि संसार में ममता, प्यार, प्रेम भी कोई चीज़ है। किसी से किसी का रिश्ता भी होता है। संबंध होता है, रिश्तेदार होते हैं, सगे-संबंधी होते हैं, कुछ लोग अपने भी होते हैं। इन्हें देखकर मालूम होता था कि हर आदमी दुखी है, पीड़ित है। इस संसार में सिवाय दुख-दर्द के कुछ और नहीं है। हर एक की जुवान पर एक ही शब्द था—'हे भगवान!' यह भक्तों की भीड़ थी।

कैजुअलटी वार्ड में दो डाक्टर और तीन नर्सें थीं। अनिल को स्ट्रेचर से मेज़ पर लिटा दिया गया। एक डाक्टर ने पूछा—'क्या हुआ?' लूसी ने कहा—'एक्सीडेन्ट हो···' डाक्टर ने फिर पूछा—'कैसे हुआ?' लूसी ने उत्तर दिया—'हम लोग कार में जा रहे थे कि अचानक इनके मुंह से चीख निकली और कार खम्भे से टकरा गई।' डाक्टर ने फिर पूछा—'आपके भी चोट आई है?' लूसी ने कहा—'कोई खास नहीं। वस टांग और हाथ पर खरोंच आ गई है।'

'इनका क्या नाम है?'

'अनिल।'

'आप बैठिये। मैं इन्हें देखता हूं।'

डाक्टर ने अनिल को देखा और फिर बोला—'मिसेज अनिल, आप घबराइये नहीं, इन्हें होश आ जायेगा। हैमेरेज तो मालूम नहीं होता। सदमा पहुंचने से बेहोश हो गये हैं। टांग पर सूजन है। उसका एक्सरे करना पड़ेगा।'

लूसी के शरीर में डाक्टर के मुख से 'मिसेज अनिल' का सम्बोधन सुन कर एक कंपकंपी-सी आ गई। वह उसकी बात को वहीं काट देना चाहती थी, लेकिन बोल न सकी। डाक्टर ने अनिल को एक इंजेक्शन दे दिया और फिर कहा—'मिसेज अनिल···'

'मैं मिसेज अनिल नहीं हूं।'

'आइ एम सॉरी। यह बहुत बच गये। आप इनकी मिसेज को टेलीफोन कर दीजिए।'

'इनकी शादी नहीं हुई है।'

'इनके घर में कोई और है?'

'कोई नहीं।'

'आपका इनसे क्या रिश्ता है?'

'जी, जी···मेरा···इनसे···मेरा मतलब है कि मैं···और···यह कार में जा रहे थे।'

'वो तो ठीक है। आपका इनसे क्या संबंध है?'

'मैंने कहा ना कि मैं···'

'मैं सब समझ गया।'

'मैं इनकी पड़ोसिन हूं।'

डाक्टर ने एक ऐसी मुस्कराहट दी जिसके लिए किसी ने कहा है—'मजबूं भाप लेती है लिफाफा देखकर'—और कहा—

'आप भी अपनी चोट पर दवा लगवा लीजिए।'

'मेरे बहुत मामूली-सी चोट आई है।'

'फिर भी।'

एक नर्स ने उसकी बांह पर और फिर टांग पर जहां खरोंच आई थी दवा लगा दी।

लूसी ने टेलीफोन देखा तो डाक्टर से पूछा—'क्या मैं टेलीफोन कर सकती हूं ?'

'कर लीजिए।'—डाक्टर ने स्वीकृति देते हुए कहा।

लूसी ने टेलीफोन उठाया और फिर नम्बर मिलाया और···

'हैलो।'

'मैं लूसी बोल रही हूं।'

'आप कहां से बोल रही हैं ?'

'मैं अस्पताल से बोल रही हूं।'

'क्या बात हो गई ?'

'मैं थियेटर आ रही थी कि रास्ते में एक्सीडेन्ट हो गया। बहुत चोट तो नहीं आई है। लेकिन मैं आज डांस नहीं कर सकूंगी।'

'क्या बात है ? चल फिर तो सकती हैं ?'

'हां, लेकिन आज डांस करने का मूड नहीं है।'

'यह आप क्या कह रही हैं ! यहां पर काफी लोग जमा हैं। टिकट बिक चुके हैं।'

'आप टिकटों के पैसे वापिस कर दीजिए।'

'लोग बहुत उतावले हो रहे हैं। अगर आज डांस न हुआ तो लोग कुर्सियां तोड़ देंगे और न जाने क्या-क्या करेंगे। बहुत नुकसान हो जाएगा।'

'अगर मैं मर जाती तो···'

'तो शायद लोग सब्र कर लेते।'

'तो फिर कह दीजिए कि मैं मर गई हूं।'

'यह आप क्या कह रही हैं ! मरें आप के दुश्मन, मिस लूसी। यह शो बिजनस है। एक बार शो उखड़ जाए तो फिर नहीं जमता। आप यहां आइए तो सही। आपको याद होगा कि पिछले साल जिस दिन मिस शोभा की मां की मृत्यु हुई थी उसने उस दिन भी डांस किया था।···

'आप कौन से अस्पताल से बोल रही हैं ?'

'सफदरजंग अस्पताल से।'

'अच्छा। मैं कार लेकर आ रहा हूं। आप अस्पताल के बाहर बस स्टैंड पर आ जाइए।' टेलीफोन बन्द हो गया। लूसी ने रिसीवर रख दिया।

उसने एक ठंडी सांस ली और उसके मुख से यह शब्द निकल—'यह तो बिजनेस है।'—'बिजनेस।'

डाक्टर ने सिर से पांव तक इस तरह देखा जैसे कोई बच्चा पहली बार हाथी को देख रहा हो और फिर कहा—

'आप डांस भी करती हैं?'

'जी, हां।'

'कौन-सा?'

'कैबरे।'

'कैबरे!' —डाक्टर ने आश्चर्य में यह शब्द फिर दोहराया।

'यह भी क्या आप के साथ काम करते हैं?'

'जी, नहीं।'

'फिर यह क्या करते हैं?'

'यह एक पत्रकार हैं।'

'अच्छा।'

'डाक्टर, इन्हें होश आ जाएगा न!'

'बिल्कुल आ जाएगा। आप चिन्ता न कीजिए!'

इतने में नर्स आई और उसने डाक्टर से कहा—'उसे होश आ गया है।' डाक्टर उठ गया और अनिल के पास गया और उसके साथ ही लूसी भी गई।

'मैं क···ह···ां हूं?' अनिल ने पूछा।

'आप अस्पताल में हैं।' —डाक्टर ने कहा।

'वो कहां है?'

लूसी एकदम आगे बढ़ी और उसका हाथ अपने आप अनिल के माथे पर पहुंच गया और उसने कहा—'अनिल!'

'आपके चोट तो नहीं लगी?'

'नहीं।'

'आपकी तबियत कैसी है?'

'बस, पैर में दर्द हो रहा है।'

'इसका अभी एक्सरा किया जाएगा।' —डाक्टर ने कहा।

'आई एम सॉरी, लूसी, मुझे माफ करना।' —अनिल ने कहा।

'माफी किस बात की ? चोट तो आपको लगी है। मैं तो बिल्कुल ठीक हूं।'

'आप जाइए। आपको डांस के लिए देर हो रही है। लोग उतावले हो रहे होंगे।'

'मैं रात को डांस के बाद आऊंगी।'

'मैं इन्हें वार्ड नम्बर ६ में भेज दूंगा और रात को वहां पर कोई औरत नहीं ठहर सकती। आप सुबह आकर मिल सकती हैं।' डाक्टर ने कहा।

'आधी रात को कहां आओगी और कैसे आओगी ! अच्छा अब जाइए आपको देर हो रही है।'

लूसी चुपचाप वहां से चल दी। चलते-चलते उसके दर्द का एक टुकड़ा आंखों से बाहर टपक पड़ा।

लूसी अस्पताल से जैसे ही बाहर आई थियेटर का मैनेजर कार लेकर पहुंच गया। लूसी कार में बैठ गई। मैनेजर ने उत्सुकता से पूछा—

'एक्सीडेन्ट कहां हुआ ?'

'सड़क पर।'

'कब हुआ ?'

'जब बुरा वक्त आ गया।'

'कैसे हुआ ?'

'बस हो ही गया।'

'आप टैक्सी से आ रही थीं।'

'हां।'

'पर आज तो टैक्सी की हड़ताल है !'

'हां।'

'कार वाला कौन था ?'

'हां।' —मैनेजर ने आश्चर्य से लूसी की ओर देखा और एक बार फिर अपना प्रश्न दोहराया—

'कार वाला कौन था ?'

'एक आदमी था, जिसे आप नहीं जानते। रास्ते में खम्भे मे टक्कर हो गई, उसके काफी चोट आई लेकिन मैं बच गई। केवल आपके थियेटर में डास करने के लिए।' —लूसी ने एक ही सांस मे यह सब कह डाला।

लूसी इस समय अपने विचारों मे खोई हुई थी। वह नही चाहती थी कि कोई उससे बात करे। उसके जी मे तो आया था कि मैनेजर से कह दे कि चुपचाप कार चलाओ और बात मत करो। लेकिन वह कह न सकी और उसके प्रश्नों का उत्तर एक कम्प्यूटर की तरह देती रही।

थियेटर पहुचते ही मैनेजर ने कहा—'आज देर हो गई। आप जल्दी से मेकअप कर लीजिए और तैयार हो जाइये। आज तो कोई ऐसा भडकता हुआ डास दीजिए कि बस लोग झूम उठें। आज डास देर से शुरू होने की सारी कसर निकाल दीजिए।'

लूसी मेकअप करके बाहर आई तो मैनेजर ने कहा—'आज कुछ मेक-अप ठीक नही हुआ है।' लूसी ने कोई उत्तर नही दिया। वो स्टेज पर चली गई।

लूसी का नृत्य आरम्भ हुआ, लेकिन आज उसके नृत्य मे वह उत्साह, वह मादकता, वह भाव-भगिमा नही थी। वह एक मशीन की तरह कांप रही थी। उसके हाथ-पैर हिल रहे थे—एक कठपुतली की तरह। वह सोच रही थी कि वह कितनी लाचार है, कितनी बेबस है। वह नाच रही थी, क्योंकि उसे नाचना था। वह सोच रही थी कि उसकी स्थिति एक लट्टू की तरह है, जो डोर खीचने पर घूमने लगता है।

५

उसकी वह मुस्कराहट जिसे देखकर दर्शकों को लगता था कि जैसे मंदिर में कोई लौ झिलमिला रही हो, आज बिल्कुल फीकी थी। उसके हृदय में आज एक अजीब उथल-पुथल थी। एक हलचल थी। एक उलझन थी। उसके हृदय के धागे आज उलझे हुए थे। और जैसे कोई किसी धागे को सुलझाने का प्रयत्न करते-करते ऊबकर थककर, एक झटके से धागा तोड़ देता है उसी तरह लूसी ने अपना नाच समाप्त कर दिया और फिर सीधे अपने मेकअप रूम में चली गई। कपड़े बदले और फिर बाहर को आई तो मैनेजर ने कहा—'आज आपके नाच में वो बात नहीं आई। वो मजा नहीं आया। वो रौनक नहीं आई। वह अदायगी नहीं आई।'

लूसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। सीधी थियेटर से बाहर आ गई। बिना उमंग से अपने काम को पूरा किया। अब कुछ टैक्सियां चलने लगी थीं। उसने टैक्सी रोकी और सीधी घर पर आ गई।

लक्ष्मी ने दरवाजा खोला और वो सीधी डाइनिंग टेबिल की एक कुर्सी पर बैठी और फिर अपनी दोनों बांहों के बीच अपना सिर रख दिया। लक्ष्मी ने पूछा—'ह्विस्की लाऊं?'

'नहीं।'

लक्ष्मी लूसी के मन की भावना को जानने के लिए उत्सुक नज़र आयी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने फिर पूछा—'आज ह्विस्की नहीं…'

'नहीं।'

'क्या आज थकी नहीं?'

'आज तो बहुत थक गई हूं। मन में एक उथल-पुथल मची हुई है, एक हलचल हो रही है, एक टीस उठ रही है, लेकिन आज मैं इस हलचल को

शान्त नहीं करना चाहती। आज मैं इस दर्द को···हां इस मीठे दर्द को झेलना चाहती हूं, मिटाना नहीं।'

'आज, दीदी, आप कैसे गई थी ? टैक्सी वालों की हड़ताल थी।'

'अनिल के साथ।'

'वो···वो···उसके साथ···! वो कहां मिल गया ?'

'जब मिलना हो तो मुलाकात हो ही जाती है। पर रास्ते में आज दुर्घटना हो गई।'

'हाय राम, दुर्घटना ?' लक्ष्मी ने ठंडी सांस खींचते हुए कहा—'चोट तो नहीं आई ?'

'मुझे तो चोट नहीं लगी, पर वो बेहोश हो गया। मैं उसे अस्पताल ले गई और फिर डांस पर चली गई।'

'उसे बेहोश छोड़ कर···दीदी, आप डांस पर चली गईं !'

'हां, मैं डांसर जो हूं, नाचने वाली, हमारा कोई अपना नहीं, हम किसी के नहीं, बस हम तो एक खिलौना हैं, केवल एक तमाशा। मनोरंजन और दिल बहलाने की वस्तु। और हमारे भी दिल होता है, यह किसी को मालूम नहीं, न कोई जानता है और न जानने का प्रयत्न करता है। भला जानने का प्रयास भी क्यों करे !'

यह कहते-कहते लूसी खो गई। उसे लगा कि उसकी हृदय की वीणा के तार पर किसी ने एक विकल रागिनी की धुन छेड़ दी। अतीत की स्मृतियों ने उसे घेर लिया। पुरानी यादों ने उसे लपेट लिया। धीरे-धीरे वह धीमी तथा दर्द भरी संगीत लहरी एक कोलाहल में बदल गई। इस कोलाहल में थी उभरती हुई चीखें, लम्बी दर्दनाक सिसकियां, कराहती हुई आवाज। वह बेचैन हो गई। वह तड़प उठी। उसे अपना आर्तनाद असह्य हो गया। वह भीतर ही भीतर अनुभव करने लगी कि वह रो रही है··· चीख-चीखकर रो रही है।

कुछ देर बाद वह अपने इस आर्तनाद को दबाकर सोचने लगी कि वह क्यों रोये, वह क्यों आंसू बहाये। वह जो आनन्द बांटती है, वह जो खुशी लुटाती है, वह जो मुस्कराहट बिखेरती है। क्या इस जमाने में उसके लिए एक भी खुशी नहीं, एक भी सुख नहीं। वह पतझड़ के मौसम में क्यों सिमटी

रहे। वह भी वहारों से लिपट जाये, नई कोपलों और पत्तों से अपने को ढक ले। वह मुस्कराई, हंसी और फिर ज़ोर से हंसी। लक्ष्मी को एक प्याला काफी लाने को कहा। लक्ष्मी ने काफी का प्याला लाकर उसके सामने रख दिया। वह काफी की चुस्कियां लेते हुए बुदबुदायी—'क्या मेरा कोई अपना नहीं हो सकता! क्या मैं किसीकी नहीं हो सकती? इतनी बड़ी दुनिया में क्या कोई मेरा हमदर्द नहीं हो सकता? क्या कोई ऐसा नहीं हो सकता जो मेरे शरीर को नहीं मुझे चाहे? क्या कोई ऐसा नहीं हो सकता जो मेरे शरीर को नहीं बल्कि मुझे दिल में समाये? जो मुझे अपने बिस्तर पर लिटाने की जगह मुझे अपने हृदय में बिठा ले। जो मुझे ललचाई नज़रों से न देखे। जिसकी बांहों के कसाव में स्वार्थ न हो, जिसके आलिंगन में मुझे मसल देने का इरादा न हो, जिसके चुम्बन में वासना की आग नहीं, बल्कि सच्चे प्रेम की छाप हो। जिससे चिपककर, लिपटकर कामुक क्रियाओं का खेल न खेला जाये बल्कि जिसके सीने पर सिर रखकर वह अपना दर्द भूल जाये और उसे शान्ति मिले।'

वह अपनी कल्पना की उड़ान में बड़ी देर तक खोई रही और फिर उठ कर अपने बिस्तर पर चली गई। वह करवटें बदलती रही। उसे नींद नहीं आई। चलचित्र की तरह अनिल की भिन्न-भिन्न तस्वीरें उसके सामने आई। अनिल जब पहले-पहल उससे मिलने आया था। उसने लक्ष्मी से कहा था—'मैं उनसे मिलने आया हूं और मिलकर ही जाऊंगा।' उसे देखकर वह समझी थी कि वह भी कोई रस का लोभी भंवरा है। परन्तु उसने उसका रूप नहीं बल्कि उसका दर्द देखा था। उसने कहा था—'आपकी मुस्कराहट एक दर्द की मुस्कराहट है। आपका अंग-संचालन एक पीड़ा की ऐंठन है।' किसी पुरुष को समझने में पहली बार उसने गलती की थी। दूसरी तसवीर: जब वह अनिल के घर अपना सारा क्रोध उड़ेलने गई थी, उसका यह कहना—'आप अपने दिल से पूछिये, अपने मन को टटोलिये, और फिर कहिये क्या यह कला है, हुनर है!' उसे ऐसे लगा था मानो किसी ने गर्म राख पर पानी के छींटें दे दिये हों। 'आपने भी शादी नहीं की या यह कहिये कि आपकी अभी तक शादी हुई नहीं।'—कहकर उसने उसके हृदय की सबसे भीतरी परत को उधेड़ दिया था। उसके बाद उसकी वह तस्वीर जब

उसने उसे कनाट प्लेस में गुंडों से बचाया था और फिर जब उसकी कार में बैठे-बैठे ब्रेक लगाने से वह उसके कंधे से टकराई थी। कैसा मार्मिक था वह स्पर्श ! कितना खिचाव था उस हार्दिक बंधन में। उसे अनिल की जो भी तस्वीर सामने आई उसमें एक सहज निश्चल आकर्षण प्रतीत हुआ। उसके बात करने में, उठने-बैठने में, चलने-फिरने में एक मनमोहक शिष्टता दिखाई दी। वह इन तस्वीरों को देखते ही देखते न जाने कब सो गई और फिर उठ बैठी। अभी अंधेरा था, सवेरा नहीं हुआ था। उसने घड़ी देखी। अभी चार बजे थे। उसे विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा जैसे घड़ी रुक गई हो। उसने घड़ी को कान से लगाकर देखा। घड़ी चल रही थी। उसने एक पत्रिका उठाई उसे पढ़ने लगी। दो-चार पन्ने पढ़ने के बाद उसे मालूम हुआ कि वह सिर्फ पन्ने उलट रही है, उसकी आखें शब्दों पर तैर रही थी। उठते-बैठते, करवटें बदलते, कभी विचारों में डूबते और कभी कल्पना में तैरते, किसी तरह सवेरा हो गया। वह उठी। लक्ष्मी को उठाया। लक्ष्मी ने उठते हुए लूसी को एक आश्चर्यजनक दृष्टि से देखा। लूसी उसका प्रश्न समझते हुए बोली—'अस्पताल जाना है, जल्दी चाय वगैरा तैयार कर दो। थरमस में काफी डाल दो। अस्पताल काफी लेकर जाऊंगी।'

लक्ष्मी ने जानते हुए भी अनजान बनते हुए कहा—'अस्पताल में कौन है ?'

'वही।'

'वही कौन ?'

'रात तुझे बताया तो था।'

'लो, मैं तो भूल ही गई थी।'—लक्ष्मी ने हंसकर कहा।

लूसी स्नान आदि से निपट कर, अनिल के लिए थरमस में काफी लेकर अस्पताल पहुंच गई। अनिल अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था। लूसी का स्वागत करते हुए अनिल मुस्करा दिया। लूसी ने पूछा—

'कैसे हैं आप ?'

'रात को यह हाथ दर्द करता रहा।'

'रात नींद आ गई थी ?'

'दर्द में नींद कहां आती है ! आप तो रात भर चैन से सोई होंगी !'

'मुझे भी नींद नहीं आई।'—कहकर वह कुछ सकपका गई।

'क्यों, आपको क्या हो गया ?'

'कुछ नहीं, बस यूं ही।'

दोनों मुस्करा दिये। लूसी ने थरमस में से काफी निकाली और काफी का प्याला अनिल की तरफ बढ़ाते हुए कहा—'लीजिए, काफी पीजिये।'

'आपने क्यों कष्ट किया ?'

'विश्वास कीजिए, मैं भी आपकी तरह कोई ऐसा काम नहीं करती, जिसमें मुझे कष्ट हो। दोनों की हल्की-सी हंसी फिर आपस में टकरा गई। अनिल ने बायें हाथ से काफी का प्याला पकड़ लिया। उसके दाहिने हाथ में चोट लगी थी। अनिल ने काफी का प्याला थामकर पूछा—

'आप नहीं पिएंगी ?'

'मैं पीकर आई हूं।'

'क्या कहा, सुबह ही सुबह पीकर आई हो ?'

'जी हां, सिर्फ काफी।'

दोनों खिलखिला कर हंस दिए।

'काफी बहुत अच्छी बनी है।'—अनिल ने काफी का घूंट पीते हुए कहा।

'सच !'

'हां।'

'आपके हाथ की बनी काफी पीकर तो मज़ा आ गया।'

'काफी मेरे हाथ की नहीं, लक्ष्मी के हाथ की बनी है। मैं उससे कह दूंगी।'

'क्या ?'

'यही कि आपको लक्ष्मी के हाथ की काफी पीकर मजा आ गया, ठीक है न !' —दोनों फिर हंस दिए। हंसी में सरसता थी और उल्लास भी। अनिल का उस दिन एक्सरे हुआ। उसकी दायें हाथ की हड्डी में दरार आ गई थी। हाथ पर तीन सप्ताह के लिए प्लास्टर कर दिया गया और उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। लूसी उस दिन प्लास्टर होने तक उसके साथ रही और फिर उसे टैक्सी में बिठाकर उसके घर ले आई। अनिल

टैक्सी से उतरा तो लूसी ने कहा—'मैं इसी टैक्सी को अपने घर ले जाऊंगी।'

'अब कब आओगी?'

'जब फुरसत मिलेगी।'

'कब फुरसत मिलेगी?'

'कल।'

दोनों ने एक अर्थपूर्ण दृष्टि से एक दूसरे को देखा और फिर टैक्सी चल दी।

६

दूसरे दिन सवेरे से ही लूसी का मन अनिल के पास जाने के लिए छटपटाने लगा। वह कुछ गुनगुना रही थी। लक्ष्मी से उसका यह परिवर्तन छिपा नहीं रहा। चेहरे से उसकी भावना प्रकट हो रही थी। लक्ष्मी ने कहा—'दीदी, क्या उससे मिलने जाना है ?'

'किससे ?'

'उसी से, जिससे टक्कर हुई थी।'—लक्ष्मी ने हंसते हुए कहा।

'वो बीमार है, खबर लेने तो जाना ही चाहिए।'

'एक दिन पहले भी तो उसके यहां गईं थीं। तब भी आपने कहा था कि ऐसी खबर लूंगी कि याद रखेगा।' लक्ष्मी ने व्यंग कसते हुए कहा।

'नहीं, वैसी खबर नहीं।'—यह कहकर लूसी जोर से हंस दी।

'आदमी तो शरीफ मालूम होता है।'—लक्ष्मी ने उसका मन कुरेदने के लिए कहा।

'लगता तो शरीफ ही है। औरों से बिल्कुल अलग। दूसरों से एकदम भिन्न। निष्कपट, निश्छल, जैसा मन के अन्दर वैसा ही बाहर। कितना सरल, सभ्य, सहृदय और सौम्य !' यह कहते हुए उसकी पलक बन्द हो गई और उसके चेहरे की आकृति एक सुन्दर, सुखद और सुहावने सपने की प्रतिक्रिया से जगमगा उठी। वह खो गई सपनों की झिलमिल में वह, उड़ गई कल्पना के पंखों पर। ऊंची, और ऊंची और बहुत ऊंची।

लूसी जब अनिल के पास पहुंची तो वह बिस्तर पर लेटा हुआ था। लूसी ने जाते ही कहा—

'गुडमार्निंग।'

'वेरी गुडमार्निंग'—अनिल ने उत्तर दिया।

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह कि आज की मार्निंग तो गुड से वेरी गुड हो गई है।'

'वो कैसे ?'

'आप जो आ गई हैं।'

दोनों मुस्करा दिए। लूसी अनिल के सामने कुर्सी पर बैठ गई। लूसी ने पूछा—

'आपकी तबियत कैसी है ?'

'ठीक है। लेकिन यह बाजू रात दर्द करता रहा।'

'बहुत दर्द है क्या ?'

'बहुत तो नहीं पर दर्द है। डाक्टर ने कहा था कि एक-आध दिन दर्द होगा फिर ठीक हो जायेगा।'

कुछ क्षण दोनों चुप रहे और फिर लूसी ने मौन भंग किया—

'मुझे बहुत अफसोस है। आपको मेरी वजह से चोट लग गई है। दर-असल मैं बहुत भाग्यहीन हूं। दुर्भाग्य तो मेरा जन्म का साथी है। वह मेरा पीछा नहीं छोड़ता। मैंने अपने साथ आपको भी लपेट लिया।'

'गलत। यह चोट आपकी वजह से नहीं लगी। आप तो भाग्यशाली हैं। आपकी वजह से मैं भी बच गया, वरना अपना तो 'राम नाम सत्य है' हो गया होता।'

'ओह, नो, भगवान के लिए ऐसा मत कहिए।'

अनिल का कंबल उसकी टांग से एक तरफ हट गया। अनिल ने झुककर उसे बायें हाथ से ठीक करने का प्रयत्न किया तो लूसी ने फौरन उठकर कंबल ठीक कर उसके ऊपर कर दिया।

'इस प्लास्टर ने तो मुझे अपाहिज बना दिया। दायां हाथ है ना, बायां हाथ होता तो इतनी दिक्कत न होती।'

'तीन हफ्ते तो यूं गुजर जायेंगे।'—लूसी ने चुटकी बजाते हुए कहा।

'जी नहीं, तीन हफ्ते तो तीन हफ्तों में ही गुजरेंगे।'

दोनों हंस दिए।

'ओह, आप चाय पियेंगी या काफी ? माफ कीजिएगा, मेरे यहां व्हिस्की नहीं मिलेगी। अगर आप बुरा न मानें तो मैं कह दूं कि मुझे आपका शराब पीना अच्छा नहीं लगता। मुझे शराब से नफरत है।'

'मुझसे तो नहीं !' —लूसी ने एक प्रश्नसूचक दृष्टि फेंकते हुए कहा ।

अनिल ने अपनी एक मधुर मुस्कान से सिर हिलाकर कह दिया—'नहीं', और फिर वोला—'नौकर वाहर गया है । थोड़ी देर में आ जाएगा तो काफी वना देगा । मेरा तो हाथ वंधा है, वरना मैं खुद ही काफी वना कर पेश कर देता ।'

'लेकिन मेरे हाथ तो ठीक हैं । मैं आपके लिए काफी बनाकर लाती हूं ।'

'आप क्यों कष्ट कर रही हैं !'

'मैं आपको पहले भी कह चुकी हूं कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करती जिसमें मुझे कष्ट हो । वस इतना वता दीजिए कि काफी, दूध, चीनी तो है न ।'

'सव रसोई में है ।'

'स्टोव है या गैस ?'

'गैस ।'

'तो फिर क्या मुश्किल है ! मैं अभी वनाकर लाई ।'

अनिल चारपाई से उठने लगा तो लूसी ने आग्रह किया—'आप लेटे रहिए, मुझे आपकी रसोई का रास्ता मालूम है ।'

'मैं आपको वता दूं कि दूध-चीनी कहां रखी है ।'—अनिल फिर उठने लगा तो लूसी ने व्यंग कसा :

'विश्वास रखिए मैं आपकी रसोई से कुछ चुराऊंगी नहीं ।···आप लेटे रहिए ।'

लूसी रसोई में चुपचाप चली गई । गैस जलाई और एक पतीले में पानी डालकर गैस पर रख दिया । उसे इस समय एक विशेष आनन्द का अनुभव हो रहा था । एक विशेप अनुभूति मिल रही थी । वह गुनगुनाने लगी और फिर कुछ सोचकर एकदम चुप हो गई । उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया । चीनी और दूध पास ही रखा था । उसने दो प्याले काफी वनाई और अनिल के सामने रखते हुए कहा ।

'लीजिए सरकार, काफी तैयार है ।'

'काफी तो वहुत वढ़िया वनी है ।'

'बिना चखे ही कह दिया !'

'जिस तरह कई पंडित माथा देखकर भविष्य बता देते हैं, इसी तरह मैंने काफी की शक्ल देखकर बता दिया कि काफी बहुत बढ़िया है।'

'धन्यवाद।'

'धन्यवाद, तो मुझे आपका करना चाहिए।'

'तो चलो आप भी धन्यवाद कह दीजिए।'

'धन्यवाद।'

'चलो हिसाब बराबर हो गया।'—लूसी ने हंसकर कहा।

लूसी ने काफी का प्याला उठाकर अनिल की ओर बढ़ाया और उसने उससे पलट कर बाएं हाथ में थाम लिया। दोनों काफी की चुस्कियां भरने लगे। बीच-बीच में एक दूसरे की तरफ देख लेते और कभी-कभी नजरें टकरा जातीं। कुछ देर दोनों चुप रहे, फिर अनिल ने कहा—

'आप क्या सोच रही हैं ?'

आप क्या सोच रहे हैं ?'

'पहले आप बताइए।'

'पहले आप बताइए।'

'लेडीज़ फर्स्ट।'

'मैं सोच रही थी···मैं सोच रही थी···तो मुझे···'

'अब पता चला कि कुछ भी नहीं सोच रही थी।'

दोनों हंस दिए और इस हंसी में अनिल जो प्याला बायें हाथ में थामे हुए था संभल न सका। काफी का प्याला उसके हाथ में छूट गया और उसके तमाम छींटे लूसी की साड़ी पर जा गिरे। अनिल ने झेंपते हुए कहा '

'माफ कीजिएगा। बायें हाथ में प्याला था। इसीलिए संभाल नहीं सका।'

'कोई बात नहीं। बच्चों और बीमारों से ऐसी बातें हो ही जाती हैं।'

'आपकी साड़ी खराब हो गई। यह काफी के दाग तो नहीं जायेंगे।'

'नहीं जायेंगे तो न जाएं। यहीं पड़े रहें। अपना क्या ले लेंगे।'

'एक निशानी छोड़ जायेंगे।'

लूसी उठी और रसोई से गीला रुमाल लिया और फिर साड़ी पर

काफी के दाग पड़े थे फेरने लगी।

'मुझे बड़ा अफसोस है।'

'अफसोस की बात छोड़िए। कोई खुशी की बात कीजिए।'

'हां, तो मुझे बहुत खुशी हुई है कि आप यहां आ गई।'

इसी तरह कुछ सवाल करते, कुछ जवाब देते, कुछ पूछते, कुछ बताते, कुछ हंसते और कुछ हंसाते, कुछ सुनते और कुछ सुनाते कई घंटे बीत गये और फिर लूसी ने उस दिन के लिए अनिल से विदा ली।

दूसरे दिन उसका मन अनिल के पास जाने के लिए फिर छटपटाने लगा। लेकिन उसके मस्तिष्क ने सोचा कि रोज़-रोज़ जाना ठीक नहीं। वो उसका कौन है? वो भी एक पुरुष है और किसी भी पुरुष पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसके मन और मस्तिष्क में एक द्वंद्व छिड़ गया। वह इसी उलझन में उलझी हुई घर से निकल पड़ी। वह सोचती रही कि उसे नहीं जाना चाहिये, लेकिन कदम आगे बढ़ते गये। एक खाली टैक्सी जाते हुए देख उसके मुख से अनायास ही निकल गया—'टैक्सी!' टैक्सी रुक गई और वह उसमें बैठ गई। मन और मस्तिष्क का द्वंद्व अब भी जारी था। लेकिन टैक्सी दौड़ रही थी अनिल के घर की ओर। थोड़ी देर में उसने अपने आपको अनिल के दरवाज़े पर खड़ी पाया। उसका हाथ दरवाज़े पर लगी घंटी की ओर बढ़ा, फिर रुका और फिर उसने घंटी की ओर हाथ बढ़ाया और घंटी दबा दी। अनिल ने अन्दर से आवाज़ दी—

'चले आइये, दरवाजा खुला है।'

लूसी ने दरवाजा खोला। अनिल एक पत्र पढ़ रहा था। लूसी ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और अनिल ने अपना बायां हाथ ऊपर उठा दिया। लूसी ने अनिल के पास बैठते हुए पूछा—

'अब हाथ कैसा है?'

'अब तो पहले से ठीक है। रात को ठीक रहा है। दर्द नहीं हुआ। लेकिन दायां हाथ बंधा होने से बड़ी मुश्किल हो रही है।'

'वो तो होगी ही।'

'कल आपकी साड़ी खराब हो गई उसका मुझे बड़ा अफसोस है।'

'विद्यार्थी की स्याही फैल जाये तो कहा जाता है कि वह पास हो

जायेगा। इसी तरह अगर हाथ में काफी फैल गई तो इसका मतलब हुआ कि हाथ बिल्कुल ठीक हो जायेगा।'

'आप कहती हैं तो जरूर ठीक हो जायेगा।'

अनिल ने मुस्कराते हुए कहा।

अनिल ने लूसी को वह पत्र, जो वह पढ़ रहा था, दिखाते हुए कहा—'यह एक पत्रिका के सम्पादक का पत्र है। उनका एक विशेषांक निकल रहा है। इन्हें एक कहानी भेजने का वायदा किया था। कहानी लिख चुका हूं। बस आखिरी पैराग्राफ लिखना है, लेकिन दाया हाथ प्लास्टर में होने के कारण अब एक महीने तक नहीं लिख सकूंगा। और तब तक विशेषांक प्रकाशित हो जायेगा।'

'आपके पास टाइप राइटर तो है। —आप बोलते जाइए मैं टाइप कर दूंगी।'

अनिल ने आश्चर्यचकित स्वर में पूछा—'आप टाइप कर लेती हैं!'

'जी हां, मैं कंवरे डांसर से पहले टाइपिस्ट थी।'—लूसी यह कहकर सामने मेज पर पड़े टाइपराइटर के पास जा बैठी और टाइपराइटर पर उंगलियां दौड़ाने लगी।'

'आप टाइपिस्ट से कंबरे डासर कैसे बनी?'

'यह एक लम्बी कहानी है। इसे छोड़िये। पहले आप अपनी कहानी पूरी कीजिए।'

लूसी ने झट से पास पड़े हुए कागज टाइपराइटर पर चढ़ा लिए और कहा—'बोलिए।'

अनिल ने लूसी को मेज पर पड़े हुए कागज और कहानी के पन्ने उसे देने को कहा। लूसी ने वह पन्ने उसे पकड़ा दिए, उसने अंतिम पृष्ठ पढ़ा और फिर कहा—लिखिए…

राजन आज एक महीने बाद लौटा था। इस एक महीने में नीनू हर पल, हर क्षण उसके दिल और दिमाग में रही। वह जल्दी से जल्दी अपनी नीलू के पास पहुंच जाना चाहता था। नीलू जो उसके हृदय की धड़कनों में बस गई थी। नीनू जो उसके हृदय की गहराइयों में उतर गई थी। नीनू जिसने उसके प्यार की कसमें खाई थी। नीनू जिसने उससे शादी का वायदा

किया था। नीलू उसकी सब कुछ थी। उसका संसार नीलू से था। उसके हृदय से सिर्फ एक ही आवाज आती थी—नीलू, नीलू, नीलू।

वह स्टेशन से उतरा। टैक्सी की ओर चल दिया अपनी नीलू से मिलने। रास्ते में वह सोच रहा था कि नीलू उसे देखते ही उससे लिपट जाएगी। उसकी छाती पर अपना सिर रख देगी और कहेगी—'आप बड़े वो हो। इतने दिन कहां रहे ? यूं मुझे छोड़कर मत जाया करो।' वह इन सब बातों का जवाब उसे अपनी बांहों में बांधकर एक प्रेम भरे चुम्बन से देगा।

टैक्सी इंडिया गेट के पास से जा रही थी। पेड़ों पर अंधेरा छाने लगा था। अचानक दूर घास पर उसे एक साया दिखाई दिया। उसने टैक्सी रोकी और वह वहां उतर गया। वो साया नीलू का था। वो तो उसके साये को भी पहचानता था। वह उस ओर चल पड़ा। उसने देखा नीलू किसी युवक की गोद में सिर रखकर लेटी है और वह युवक उसके बालों को सहला रहा है। वह चौंका। चकराया। इतना विश्वासघात! औरत सिर्फ एक फन्दा है, एक जाल है, एक छलावा है। उसका प्यार धोखा है, उसका प्रेम झूठा है।...

लूसी की उंगलियां टाइपराइटर पर दौड़ती हुई एकदम रुक गई और वह जोर से बोली—

'यह गलत है, यह झूठ है। पुरुष ने स्त्री को सदा एक खिलौना समझा है। केवल अपनी वासना। तृप्ति का साधन। पुरुष ने स्त्री को सदा ठगा है। स्त्री तो सीता, सावित्री और पद्मिनी होती है और पुरुष रावण और कंस।'

'न हर स्त्री सीता होती है और न सावित्री। और इसी तरह न हर पुरुष रावण होता है और न कंस। अच्छे आदमी भी होते हैं और बुरी औरतें भी।'—अनिल ने उत्तर दिया।

'इतिहास गवाह है कि पुरुष ने स्त्री पर सदा अत्याचार किया है। उसकी लाचारी और बेबसी का अनुचित लाभ उठाया है। उसे केवल भोग की वस्तु समझा है। वैशाली में सुन्दर स्त्री को नगरवधू घोषित करने की प्रथा थी। सर्वसुन्दरी आम्रपाली को नगरवधू बनाया गया था।

वह गणिका बना दी गई थी। गणिका यानी कि वेश्या, ताकि उस पर एक का अधिकार न रहे। ताकि उसका सौंदर्य-रस-पान वैशाली के विलासी धनिक, राजपुत्र और शक्तिशाली लोग कर सकें। पुरुष समाज का विचार था कि स्त्री भोगने की वस्तु है और सर्वसुन्दरी एक उत्तम मदिरा की तरह मदिरालय में सब में बांटी जाए। वह किसी एक पात्र में सीमित न रहकर प्रत्येक रसिक, मद्यपान करने वाले, के जाम में छलक जाए।'

लूसी यह सब एक साथ एकदम कह गई। अनिल ने कहा—'आपने जो भी कहा और जिस तरह कहा उसकी मैं दाद देता हूं। आपको तो लेखिका होना चाहिए था।'

'मैं लेखिका नहीं बनना चाहती। आप यह बताइए कि जो कुछ मैंने कहा है वह सच है या नहीं?'

'सच है, बिल्कुल सच है। लेकिन यह तो तसवीर का एक पहलू है। विषकन्या भी तो औरत ही होती थी। वेश्या भी तो औरत ही होती है।'

'विष कन्या को विष किसने दिया? उसमें विष किसने भरा? पुरुष के स्वार्थ ने औरत को वेश्या बनाया है। कोई भी औरत वेश्या बनती नहीं। वह वेश्या बनाई जाती है। वेश्या बनना पड़ता है उसे।'

'अब तो ऐसा लगता है कि आपको वकील होना चाहिए था। आपके तर्क का जवाब नहीं।'

'साधारण आदमी को तो छोड़िए, लेकिन संसार के प्रसिद्ध व्यक्तियों ने भी औरत से केवल उसके शरीर को चाहा है। उससे अपनी रातें गर्म की हैं। अपने बिस्तर की सजावट समझा है। इंग्लैंड का सिरमौर, इंग्लैंड का गौरव, इंग्लैंड का महान् कवि बायरन औरत को बिस्तर तक ही प्यार करता था। हर रात अपने बिस्तर को नई औरत से सजाता था। औरत उसके लिए एक रसदार फल थी। जिसका रस चूसने के बाद वह उसे बचे हुए फल के गूंद की तरह फेंक देता था। उसने न जाने कितनी कुमारियों का कौमार्य भंग किया, न जाने कितनी पत्नियों का सतीत्व नष्ट किया और न जाने कितनी सुन्दरियों को अपनी ऐयाशी में डुबो दिया। और तो और, उसने अपनी सौतेली बहन आगस्टा में भी केवल एक औरत का शरीर

देखा। और उस शरीर से भी एक दिन गुंथ गया। फ्रांस का महान रूसो जिसने अनेक महिलाओं को अपनी कामुकता रूपी खेल का बनाया। वह छटपटाता रहा, वह बेचैन रहा, वह अशांत रहा और रहा। उसकी प्यास तब तक न बुझी जब तक उसने मादाम दावा शरीर को पा नहीं लिया। मादाम दावारेज जो उसे मुन्ना कहती थी वह मामा कहता था।

'चित्रकला का महारथी पिकासो। आधुनिक चित्रकला का पिकासो। रंगों का सबसे बड़ा खिलाड़ी पिकासो। वह औरत को भी एक रंग समझता था। जो रंग पसंद आया उसका प्रयोग किया और देर के बाद अपनी कूची धोकर दूसरे रंग में रंग दी। वह कपड़ों की औरत बदलता था। वह अपनी कलाप्रेमी औरतों को सीने से लगा और उनसे खुल खेलकर भोगने के बाद उन्हें इस तरह अलग फेंक जैसे वो कोई औरत नहीं, बल्कि उसके सीने पर रेंगती हुई छिपकली है

लूसी यह सब एक भावात्मक अंदाज में कह गई। अनिल मुस्क और बोला—'रवीन्द्रनाथ टैगोर, निराला, जयशंकर प्रसाद ऐसे म कवि थे जिनका चरित्र बेदाग था। दुनिया में हर तरह के लोग हैं। औ भी अच्छी होती हैं और पुरुष भी। बुरी औरतें भी होती हैं और पु भी। क्या आप समझती हैं दुनिया में कोई औरत बुरी नहीं है, हर औ एक देवी है?'

'नहीं, मैं यह तो नहीं कहती।'

'यह तो एक कहानी है।'

'किसकी?'

'मेरी।'

'आपकी। आपके जीवन में क्या कोई नील आई है?'

'नहीं।'

'तो फिर यह कहानी किसकी है?'

'कहानी तो बस कहानी होती है कल्पित और गढ़ी हुई मैं एक ऐसी कहानी लिख दूंगा जिसमें पुरुष ने स्त्री को छ बस फिर तो आप खुश हो जाएंगी?'

'हां, हो जाऊंगी।'

'तो पहले यह कहानी तो समाप्त कर लो।'

'बोलिए।'

अनिल बोलता गया और वह टाइप करती रही।

यह क्रम तीन सप्ताह तक चलता रहा : जब तक अनिल के हाथ का प्लास्टर नहीं उतरा। उसे टाइप करते हुए एक अद्भुत आनन्द की अनुभूति होती। उसे ऐसा लगता जैसे कोई संगीतज्ञ किसी साज पर किसी गवैया की संगत कर रहा हो।

लूसी अपनी साड़ियों की अलमारी के सामने खड़ी थी। कभी हरी साड़ी निकालती और कभी पीली, कभी बनारसी तो कभी मैसूर के सिल्क की, कभी औरंगाबादी, तो कभी मुर्शिदाबादी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कौन-सी साड़ी पहने। आज उसके हृदय में कोई उमंग गुदगुदा रही थी। वह चाहती थी कि आज वह सबसे अच्छी साड़ी पहने, शृंगार करे, वह सुन्दर—बहुत सुन्दर और बहुत ही सुन्दर दिखाई दे। आकर्षण से सराबोर नवनीत की पुतली।

उसने लक्ष्मी को आवाज़ दी और उत्सुकता से पूछा—

'लक्ष्मी, कौन-सी साड़ी सबसे अच्छी लगती है?'

'दीदी; तुम पर तो हर साड़ी खिलती है।'

'फिर भी, कौन-सी साड़ी····'

'क्या अनिल के पास जा रही हो?'

'हां, अब तो बिलकुल ठीक हो गए हैं। परसों उनके हाथ का प्लास्टर काट दिया गया। आज उन्होंने इस खुशी में मुझे खाने पर बुलाया है।'

'उनका खाना तो नौकर बनाता है न?'

'आज हम लोग एक बड़े होटल में खाना खायेंगे।'

लक्ष्मी मुस्करा दी और अपनी धोती का पल्ला ठीक करती हुई बोली—

'आप यह बनारसी साड़ी पहन जाइए।'

'मैं भी यही सोच रही थी।'

लूसी ने साड़ी पहनी। इसके बाद गहनों की बारी आई। उसने ई—

एक-एक गहना अपने शरीर पर रखकर देखा और फिर छांटकर पहना। फिर शृंगार किया, जैसे वह स्वयं अपनी शृंगार कला की परीक्षा ले रही हो। इस तरह सज-संवर कर उसने फिर एक बार शीशा देखा और मन ही मन शीशे से कहा—'बहुत सुन्दर लग रही हो।' लक्ष्मी ने देखा तो झट से बोली—

'दीदी, काला टीका लगा लो, कहीं नज़र न लग जाए।'

'सच बता, लक्ष्मी, मैं कैसी लग रही हूं ?'

'बस देखते ही बेहोश हो जाएगा।'

'उंह, अच्छा मैं जा रही हूं। रात को देर से लौटूंगी।'

'लौट तो आओगी।'

लूसी रुकी, थिरकी, ठहरी, मुस्कराई और 'हां' कहकर चल दी।

लूसी कनाटप्लेस काफी हाउस के पास आ गई। अनिल ने उसे यहीं मिलने के लिए कहा था। अनिल उसकी प्रतीक्षा में पहले से ही वहां खड़ा था। लूसी ने इधर-उधर देखा, लेकिन अनिल उसे दिखाई नहीं दिया। अनिल ने उसे देख लिया और चुपके से पास आकर कहा—

'क्या ढूंढ़ रही हैं मेम साहब ! क्या कुछ खो गया है ?'

'हां।'

'क्या ?'

'जो अभी मिला नहीं है।'

दोनों ज़ोर से हंस दिये। अनिल ने लूसी को सिर से पैर तक देखा और कहा—'आज कुछ कहने को जी चाहता है।'

'तो कह डालिये, मन में क्यों रखते हो।'

'आज आप बहुत सुन्दर और ख़ूबसूरत लग रही हैं।' लूसी यह वाक्य हज़ारों बार, लाखों बार सुन चुकी थी। उसके नाच के बाद जो आता, जो मिलता उसे यही कहता। वह यह वाक्य सुनते-सुनते ऊब गई थी। तंग आ गई थी। उसके लिए यह वाक्य बेजान हो गया था। लेकिन अनिल के मुख से यह सुनकर उसे इस घिसे-पिटे वाक्य में एक ताजगी महसूस हुई। उसे अच्छा लगा। उसे खुशी हुई। उसके हृदय में एक लहर-सी दौड़ गई। उसका जी चाहता था कि अनिल यह फिर कहे और वह फिर सुने।

'आप क्या पियेंगी ?' अनिल ने पूछा।

'क्या मतलब ?'

'आप तो ड्रिंक करती हैं न ! पहले यहां से कोई व्हिस्की वगैरा ले लेते हैं, फिर घर चलते हैं। वहां आप ड्रिंक कर लीजिएगा और फिर यहां खाना खाने आ जायेंगे।'

'आप तो ड्रिंक नहीं करते ?'

'नहीं।'

'तो फिर आप मुझे पीने के लिए क्यों कह रहे हैं ?'

'क्योंकि आप पीती हैं।'

'मैं पीती हूं, केवल अपनी उदासी दूर करने के लिए। मैं पीती हूं, जब मेरा कोई साथी नहीं होता। आज मैं खुश हूं और आप मेरे साथ हैं, इसलिए आज शराब की जरूरत नहीं। आज तो मुझे बिना पिये ही नशा आ रहा है।'

'तो जरा संभल के चलिएगा।'

'आज तो संभालने वाला मेरे साथ है।'

'सच ?'

'हां।'

दोनों हंस दिए और वायुमंडल में उनकी हंसी की लहरें एक-दूसरे में घुल-मिल गईं।

अनिल और लूसी गेलार्ड की तरफ चल दिए। सड़क पार करने लगे तो एक तेज रफ्तार से आती हुई कार देखकर अनिल ने लूसी को कमर से पकड़कर कहा—'ज़रा देखकर।'

इस स्पर्श से अनिल के बदन में एक झुरझुरी दौड़ गई। उसे एक रोमांचित और मादक अनुभूति का अनुभव हुआ। अनिल का जी चाहता था कि प्रति क्षण इसी तरह कोई कार आती रहे और वह लूसी की कमर पर हाथ रखकर उसे इसी तरह सावधान करता रहे। लूसी भी इस स्पर्श से कम रोमांचित नहीं हुई। लूसी के बदन में भी इस स्पर्श से एक सिहरन दौड़ गई। उसे भी इस स्पर्श में एक अद्वितीय सुख, आनन्द और प्रसन्नता महसूस हुई। उसे लगा कि वह अभी तक अछूती और अतृप्त रही

सड़क पार करते ही चिथड़ों में लिपटे एक जीर्ण-शीर्ण भिखारी ने उसके सामने हाथ फैला दिया। अनिल ने कहा—'बाबा माफ करो।' और आगे चल दिया। भिखारी निराश नहीं हुआ और यह कहता हुआ साथ-साथ चल दिया—'भगवान आपका भला करे। भगवान करे जोड़ी सलामत रहे।'

इस जोड़ी शब्द ने दोनों के हृदय को गुदगुदा दिया। लूसी रुकी और पर्स से एक रुपया निकालकर भिखारी को दे दिया। भिखारी उनको दुआयें देता हुआ और अपने भाग्य को सराहता हुआ चला गया।

दोनों गेलार्ड गए। दोनों ने साथ-साथ खाना खाया। दोनों एक साथ कार में बैठे। दोनों के हृदय में उथल-पुथल मची हुई थी। दोनों के भीतर एक आंधी चल रही थी। दोनों के मस्तिष्क में विचारों के बवंडर उठ रहे थे। यह आंधी, यह बवंडर, यह विचार एक-दूसरे में घुल-मिल रहे थे। दोनों को लग रहा था कि उनमें कोई संबंध है, कोई रिश्ता है। दोनों को लग रहा था कि वे एक-दूसरे से जुड़े आ रहे हैं, बंधे जा रहे हैं, किसी अनजान डोर से। जुड़े आ रहे हैं, बंधे जा रहे हैं, किसी मज़बूत धागे से, किसी अटूट कड़ी से।

अनिल ने लूसी को उसके घर उतारा और फिर अपने घर आ गया। दोनों अपने-अपने घर में अपने-अपने बिस्तर पर, अपने-अपने विचारों में मंडरा रहे थे। दोनों को नींद नहीं आ रही थी। लूसी को कभी भिखारी के उस वाक्य 'जोड़ी सलामत रहे' की आवाज गूंज रही थी, तो कभी अनिल के मार्मिक स्पर्श की याद उसके हृदय में खलबली मचा देती।

अनिल के सामने भी रह-रहकर लूसी के विभिन्न चित्र उभर आते। उसके मानसिक चित्रपट पर नियान लाइट की तरह जलते-बुझते लूसी के यह शब्द 'आज तो संभालने वाला मेरे साथ है।' बार-बार उभरते और मिट जाते। अनिल तो लेखक है। वह उठा। अपना टेबिल लैम्प जलाया और अपने हृदय के उद्‌गारों को शब्दों में पिरोने बैठ गया।

७

टर्र···टर्र···टर्र—टेलीफोन की घंटी बजी। लक्ष्मी ने टेलीफोन का रिसीवर उठाया—हैलो। ओह दीदी, ये तो किसी अखबार का रिपोर्टर है—लक्ष्मी के हाथ से लूसी ने टेलीफोन ले लिया।

'इंटरव्यू, इंटरव्यू, इंटरव्यू, मैं तो तंग आ गई हूं, इस इंटरव्यू से··· आई एम सॉरी···अभी कुछ दिन तक आपसे नहीं मिल सकती···उसके बाद टेलीफोन कीजिएगा।'

लूसी ने टेलीफोन रख दिया। लक्ष्मी पत्रों का ढेर उठा लाई। कोई दो सौ पत्र। लूसी के प्रशंसकों के पत्र। लूसी को चाहने वालों के पत्र। लूसी के रूप के प्यासों के पत्र। लूसी के सौंदर्य से घायलों के पत्र। सब में वही प्यास, वही चाह, वही ख्वाहिश, वही तड़प लूसी को पी जाने की, लूसी को निगल जाने की, लूसी से लिपट जाने की और लूसी से······

टेलीफोन की घंटी फिर बजी। लूसी ने टेलीफोन उठाया—

'*हैलो···बम्बई से बोल रहे हैं।···कौन प्रोड्यूसर बाल्टीवाला।···* मैं पिछले महीने दो फिल्मों में डाम देकर आई हूं।···अभी नहीं, अगले पंद्रह दिन तो मेरे पास बहुत प्रोग्राम हैं। अगले महीने बम्बई आऊंगी तब बात करूंगी।'

टेलीफोन रखा तो देखा कि सामने अनिल खड़ा था।

'हम से इस वक्त बात करेंगी या नहीं, या फिर अगले महीने आऊं।' अनिल ने कहा।

'आइए, अनिल बाबू, आपने ही तो मुझे इस काबिल बना दिया है कि मुझे कहना पड़ता है कि मैं अगले महीने बात करूंगी।'

'मैंने क्या किया ? यह तो आपकी मेहनत का नतीजा है।'

'यह आपकी पब्लिसिटी का नतीजा है कि मुझे आज दो सौ पत्र

हैं। सात पत्रिकाओं में मेरा फोटो छपा है। फिल्म प्रोड्यूसर मेरे पीछे भाग रहे हैं। मेरे पास टेलीफोन है, कार है।'

'यह तो आपके रूप और कला का जादू है।'

'एक बात पूछूं ?'

'पूछो।'

'सच !'

हां, कहो भी।'

'आप मेरा नाच देखने क्यों नहीं आते ? अखबारों में तो मेरे नाच की बहुत तारीफ छपवाते हैं, मगर खुद कभी नाच देखने नहीं आते। क्या तुम्हें मेरा नाच अच्छा नहीं लगता।'

'मुझे तुम्हारा नाच तो अच्छा लगता है लेकिन तुम्हारा नाचना नहीं। जब तुम नाचती हो तो लोग तुम्हें ललचाई हुई निगाहों से देखते हैं, ठंडी आहें भरते हैं, जो जी में आए कहते हैं, मुझे यह सब सहन नहीं होता। लेकिन इससे क्या। तुम तो खुश हो न।'

'नहीं, मुझे शान्ति नहीं है, एकान्त नहीं है। दिल में एक टीस-सी उठती है और मुझे लगता है कि जैसे नाम, शोहरत और पैसे के अलावा कोई और चीज़ भी है जिसे पाने के लिए मेरा दिल छटपटा रहा है। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि जैसे मैं कोई टूटा हुआ तारा हूं, कटी हुई पतंग, या उस राही की तरह हूं जिसकी मंज़िल खोई हुई है।'

'क्यों, ऐसा क्यों लगता है ?'

'हज़ारों हाथ जो मेरे लिए ताली बजाने को उठते हैं उनमें से एक भी ऐसा नहीं जो प्यार से पीठ थपथपा दे। हज़ारों आंखें जो मुझे घूरती हैं उनमें से एक भी ऐसी नहीं जिसमें मुझे अपनी तस्वीर दिखाई दे। उनमें वासना और कामुकता झलकती है। इस वाह-वाह के शोर में एक भी आवाज़ ऐसी नहीं जो मेरे लिए दिल से निकली हो। मैं सच कहती हूं, मेरा मन करता है कि मैं यह डांस करना बंद कर दूं। इस शोर को चीरकर, इस कोलाहल को फाड़कर, इस वाह-वाह को हटाकर, एक ऐसी दुनिया में चली जाऊं जहां शान्ति हो, जहां मैं इतमीनान से सांस ले सकूं। किसी को सुना सकूं। जहां कोई मेरा अपना हो। जहां काम, वासना, लिप्सा की आंधी की

जगह प्यार, प्रेम, चाह की शीतल हवा के झोंके हों। लेकिन मैं अब उस रास्ते पर पहुंच चुकी हूं जहां से लौटना संभव नहीं है। शाम मैं फिर लता बन सकती।'

'क्या तुम्हारा नाम पहले लता था ?' उत्सुकता से अनिल ने पूछा।

'हां, मैं कभी लता थी। सभ्य, सौम्य, सरल लता। लेकिन दुनिया ने लता को जीने नहीं दिया। लता को मरना पड़ा और उसकी जगह पर जन्म लिया लूसी ने। चंचल, चपल, निर्लज्ज लूसी ने।'

'लता को क्यों मरना पड़ा ? लूसी ने क्यों जन्म लिया ?'—अनिल ने जिज्ञासापूर्ण प्रश्न किया।

'यह पूछकर क्या करोगे ?'

'नहीं, लूसी, तुम्हें मुझे बताना पड़ेगा।'

'सुनोगे ?'

'हां, अवश्य।'

'तो सुनो।'

यह कहकर लूसी ने कहना आरम्भ किया—'मेरे पिता एक मामूली आदमी थे। जालंधर में एक कारखाने में नौकर थे। पटेल चौक में दो कमरों का छोटा-सा मकान किराए पर ले रखा था। मैं उनकी पहली संतान थी। मुझे मेरी मां, जी भरकर लाड़ करती थी और पिताजी प्यार। वे रात-दिन मेरी बातें करते, मुझ से खेलते और मेरे भविष्य के सपने देखते। कुछ अरसे बाद मेरा एक भाई आ गया, लेकिन वह छः महीने बाद चल बसा। उसकी मृत्यु से घर में उदासी छा गई। अब घर में न मां की हंसी गूंजती और न पिताजी के कहकहे। मां की सेहत खराब होती गई और वो एक दिन हमें सदा के लिए छोड़ गईं। मां के साथ ही उनकी ममता चली गई। लेकिन ज्यों-ज्यों वक्त गुज़रता गया और पिताजी का घाव भरता गया एक दिन वह मनहूस घड़ी भी आ गई जब पिताजी मेरी नई मां ले आए। नई मां ने दो-चार दिन तो प्यार का ढोंग रचा और फिर सौतेली मां ठीक सौतेली मां बन गई। पांच वर्ष में हमारे तीन भाई-बहन और आ गए। हमारा घर नरक बन गया, जिसमें मां चीखती और चिल्लाती रहती। पिताजी ठंडी आहें भरते रहते और मैं ऐसे वातावरण में कभी आंसू बहा लेती और कभी

पी जाती। सौतेली मां मेरे हर काम में नुक्स निकालती, शिकायत लगाने का वहाना ढूंढ़ती और पिताजी भी अपना गुस्सा मुझ पर निकालते। मेरे मामा दिल्ली में रहते थे। उनके कोई संतान न थी। वो वहुत चाहते थे कि मैं उनके साथ रहूं। वो जव भी पिताजी के सामने यह प्रस्ताव रखते मेरी सौतेली मां वीच में बोल पड़ती, 'इसे यहां क्या तकलीफ है? मैं इसे अपने वच्चों से अधिक प्यार करती हूं।' पिताजी फौरन इस वात की गवाही दे देते। और मेरी दशा उस कैदी की तरह हो जाती जिसे मारा भी जाए और फिर उसे तड़फने की इजाजत न हो। एक दिन पिताजी भी एक दुर्घटना में चल वसे। मेरी सौतेली मां मुझे अभागिन वताने लगी। वह अकसर कहती कि यह पहले अपनी मां को खा गई और अव अपने पिता को मार डाला। मेरे लिए उसके साथ रहना असंभव हो गया। कुछ दिनों वाद वो अपने मायके चली गई और मुझे मेरे मामाजी दिल्ली ले गए। मामा-मामी मुझे वहुत प्यार करते। मेरी दुनिया ही वदल गई। मैं नरक से स्वर्ग में आ गई। मैंने मैट्रिक पास किया और फिर शार्टहैण्ड और टाइपिंग सीख लिया। समाचार पत्र में एक विज्ञापन पढ़कर एक प्रार्थना पत्र भेज दिया। मुझे इण्टरव्यू के लिए बुलाया गया। एक कम्पनी में स्टेनोग्राफर की जगह थी। मैं इण्टरव्यू के लिए गई। मैनेजर कोई शर्मा था। उसने मुझे अन्दर बुलाया। मेरे अन्दर जाते ही उसने फौरन वैठने को कहा और फिर मुझे कुछ इस तरह देखा कि मैं शर्मा गई। इसके वाद मेरी टाइपिंग स्पीड आदि के वारे में कुछ प्रश्न पूछे और फिर निर्णय सुनाया 'आप वहुत स्मार्ट हैं। कल से काम पर आ जाइए। आपको हम तीन सौ रुपया देंगे।' मैं वहुत खुश हुई। मुझे लगा जैसे अन्धे को आंखें मिल गई हों। घर जाकर पता लगा कि मामाजी की वदली मद्रास हो गई। मामा और मामी मद्रास चले गए और मैं वाई० डब्लू० सी० ए० में रहने लगी। मेरे दिन हंसी-खुशी में व्यतीत होने लगे। शर्माजी, कम्पनी के मैनेजर, मेरा वड़ा आदर करते। एक महीने वाद एक दिन दोपहर को चार वजे के लगभग शर्माजी ने मुझे वुलाया और आदेश दिया कि मैं दफ्तर के वाद उनकी प्रतीक्षा करूं। वो एक मीटिंग में जा रहे हैं और मीटिंग से लौटकर उन्हें एक जरूरी डिक्टेशन देना है। मैं कुछ सकपका गई और वो चले गए। पांच वजे दफ्तर से सव लोग चले

गए। वहां केवल मैं रह गई और एक चपरासी। न जाने क्यों मुझे कुछ डर-सा लगने लगा। सवा पांच बजे शर्मा जी आए और आकर मुझे अपने कमरे में बुला लिया। उन्होंने मुझे एक छोटा-सा नोट टाइप करने को दिया। मैं उनके कमरे से अपनी मेज पर चली आई और नोट टाइप कर उसे लेकर शर्मा जी के पास चली गई। उन्होंने नोट पढ़ा और फिर एक नजर से मुझे देखते हुए बोले—'वेरी गुड, तुम तो बहुत अच्छी हो। मेरा मतलब है, तुम बहुत अच्छी टाइपिस्ट हो। तुम खड़ी क्यों हो, बैठ जाओ···बैठो भी।' मैं उनके सामने कुर्सी पर बैठ गई। मैं इसी कुर्सी पर बैठकर उनसे डिक्टेशन लेती थी। लेकिन इस समय बैठते हुए मुझे कुछ डर-सा लगा। मुझे पसीना आ गया। उन्होंने फिर प्रश्न किया—

'दफ्तर में और कौन है?'

'बाकी सब तो चले गए हैं, सिर्फ चपरासी है।'

'चपरासी चाय लेने गया है।'

'मैंने तो चाय पी ली है।'

'तो क्या मैंने कभी चाय नहीं पी!'

इतने में चपरासी चाय की ट्रे लेकर आ गया। वह चाय बनाने लगा तो शर्मा जी ने उससे कहा—

'नहीं, नहीं, तुम रहने दो। तुम मत बनाओ। हम अपने आप बना लेंगे और देखो, तुम जा सकते हो। मैं चौकीदार से दरवाजा बन्द करवा दूंगा। सुबह जरा जल्दी आना।'

चपरासी ने नमस्ते की और चला गया। वो कुछ क्षण चुप रहे और फिर चौंककर बोले—

'चाय ठंडी हो रही है। बनाओ न।'

मैं चाय बनाने लगी और उनसे पूछा—

'कितनी चीनी?'

'पीता तो एक चम्मच हूं पर तुम्हारे हाथ से आधा चम्मच भी चलेगा, और न भी डालो तब भी कोई बात नहीं।' उन्होंने अपने चेहरे पर एक अजीब मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा। एक कंपकंपी···एक सिहरन···और चम्मच मेरे हाथ से गिर गया।

'आई···ए···म···सौ···री।'

'कोई वात नहीं। तुम वाई० डब्लू० सी० ए० में रहती हो। कम्पनी एक कार ले रही है। उसके वाद मैं बन्दोवस्त कर दूंगा कि कम्पनी की कार घर से ले आया करेगी।'

'मुझे तो वस आसानी से मिल जाती है।'

'तुम चाय नहीं पी रही!'

'मेरा इस वक्त चाय को जी नहीं कर रहा है।'

'तो हम भी नहीं पियेंगे।'—शर्मा जी ने कुछ रूठने के अन्दाज में कहा। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूं, क्या कहूं, किस तरह कहूं। मन करता था कि वहां से भाग जाऊं। दूर वहुत दूर। लेकिन भाग नहीं सकी। मैं केवल इतना कह सकी :

'मेरा मतलव है···मेरा मतलव है,'

'मेरा मतलव भी समझने की कोशिश करो।'

'मेरा मतलव है कि अच्छा नहीं लगता।'

'किसे अच्छा नहीं लगता? क्या अच्छा नहीं लगता? मैंने तो अभी तुम्हें सिर्फ चाय पीने को कहा है, तुमने उसी का अफसाना वना दिया। चाय नहीं पीनी तो मत पियो,' —उन्होंने त्योरियां चढ़ाते हुए कहा।

मेरे मुंह से वरवस निकल गया।

'आप नाराज हो गए। आई एम सौरी, सर।'

'नाराज़ होने की वात ही है। तुम मुझे इस काविल भी नहीं समझती कि मेरे साथ चाय पियो।' —अपने कंधे को उचकाते हुए उन्होंने कहा।

'सर, मेरा मतलव यह नहीं था। लीजिए मैं चाय पी लेती हूं।'—मैंने चाय का प्याला उठा लिया, लेकिन मेरा हाथ कांप रहा था।

'दैट इज़ लाइक ए गुड गर्ल। हां, कल लेवर कंटैक्टर से कह देना कि उसकी लेवर ठीक काम नहीं कर रही है।'

'आप ही कहिएगा। मैंने कहा तो वुरा मान जाएगा।' मैंने चाय का एक घूंट निगलते हुए कहा।

'इसमें बुरा मानने की क्या वात है? तुम्हें मेरी तरफ से पूरा अधिकार है। तुम समझती क्यों नहीं, तुम मेरी स्टेनो हो, मेरी पर्सनल सेक्रेट्री,

'समझ गई।'

उन्होंने इस तरह कहा जैसे यह किसी कहानी का शीर्षक हो। कुछ क्षण चुप रहने के बाद उन्होंने अपना हाथ मेरी गर्दन के नीचे फेर दिया। मैं सकपका गई। वो बोले—'चींटी जा रही थी।'

मैं एकदम खड़ी हो गई और बोली—'जी मैं अब जाऊं ?'

'हम भी चलते हैं।'—उन्होंने चौकीदार को आवाज़ दी। कमरा बन्द करने का आदेश दिया और हम लोग बाहर आ गए। उन्होंने अपनी कार की तरफ चलने का संकेत किया तो मैंने कहा—

'आप क्यों तकलीफ करते हैं, मैं चली जाऊंगी।'

'मैं उधर ही जा रहा हूं।'

'आप चलिए।'

'क्यों क्या बात है ? मेरे साथ जाते हुए डर लगता है ! मैं कोई हउवा हूं ! आओ बैठो।'

मैं कार की पिछली सीट पर बैठने लगी तो उन्होंने आग्रह किया :

'मेरे साथ आगे आओ। मेरे पास बैठो।'

'जी, नहीं। मैं यहीं बैठूंगी।'

'जानती हो पीछे बैठने का मतलब यह हुआ कि मैं तुम्हारा नौकर हूं। यानी कि ड्राइवर।'

'मेरा यह मतलब नहीं है।'

'तो इधर मेरे पास आइए। आओ भी। शाबाश। कम आन। गुड गर्ल।'—मैं उठकर उनके साथ बैठ गई—डरी हुई···सहमी हुई। वो कार चला रहे थे और बीच-बीच में एक ललचाई हुई नज़र से मुझे देख लेते। कार चल रही थी और मेरा दिल धड़क उठा।

'तुम इतना सिकुड़ कर क्यों बैठी हो ? आराम से बैठो।'

'मैं ठीक हूं।'

'चुप क्यों हो ? क्या सोच रही हो ?'

'कुछ नहीं।'

'प्लाजा में बहुत अच्छी पिक्चर लगी हुई है। कहो तो कल शाम के दो टिकट मंगवा लूं !'

और उम्मीदों का तांता लग गया। अंधकार में एक किरण, एक रोशनी, एक उजाला। शायद यह किरण पकड़ लूं, यह रोशनी थाम लूं, यह उजाला हाथ आ जाए।

मैं इंटरव्यू के लिए पहुंची। वहां आठ-दस लड़कियां और भी आई हुई थीं। बारी-बारी से चपरासी आवाज़ लगाता और इंटरव्यू के लिए अन्दर चली जाती। मेरी भी बारी आई। मैं अन्दर गई। एक बहुत बढ़िया सजा हुआ कमरा। वहां थे, कम्पनी के जनरल मैनेजर वर्मा। गोरे, सुडौल, आकर्षक व्यक्तित्व। उमर लगभग पचास वर्ष। चेहरे पर धन और वैभव की चमक। मैं अन्दर गई तो उन्होंने सिर हिलाकर मेरे अभिवादन का जवाब दिया और हाथ से अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। मैं बैठ गई। उन्होंने मुझे क्षण भर देखा, मुस्कराए और फिर पूछा—

'आपकी शार्टहैंड की क्या स्पीड है?'

'लगभग एक सौ बीस, सर।'

'टाइपिंग की?'

'पचास के करीब।'

'ओह, तो आप तो हर तरह से नंबर वन हैं।'

'आपने पहले कभी नौकरी की है।'

'जी, हां। यहीं एक कम्पनी के हेड आफिस में।'

'आप वहां क्या करती थीं?'

'मैं जनरल मैनेजर की सेक्रेट्री थी।'

'यू मीन, परसनल सेक्रेट्री! आपको वहां क्या काम करना पड़ता था?'

'डिक्टेशन लेना और टाइप करना और···'

'मैं समझ गया और जो भी उनका पर्सनल काम था।'

'मेरा मतलब है दफ्तर में जो उनका···'

'सब कुछ दफ्तर में ही होता है—।' कहकर हंस पड़े और फिर एक अजीब अंदाज में बोले—'आपको हमारे साथ भी सब कुछ करना पड़ेगा, सब कुछ, समझ गईं!'

'क्या मतलब?'—मैंने चौंककर कहा।

'मेरा मतलब है, डायरी, डिस्पैच, फाइल वर्क टाइप यानी कि सब कुछ करना पड़ेगा।'

'मैं यह सब कुछ करूंगी।'

'तुम तो बहुत समझदार हो। सब समझती हो। मुझे आप जैसी लड़की की जरूरत थी। आपको वहां क्या तनखा मिलती थी?'

'तीन सौ।'

'हम आपको साढ़े तीन सौ देंगे।'

'थैंक यू, सर।'—मैंने खुश होते हुए कहा।

'साल भर तक आपको साढ़े तीन सौ मिलेंगे और अगर आपने हमें खुश कर दिया, मेरा मतलब है, अगर हमें आप और आपका काम पसंद आ गया तो हम आपको परमानेंट कर देंगे और सौ रुपया तरक्की हो जाएगी।'

'मैं दिल लगाकर काम करूंगी।'

'गुड। अगर आपने दिल लगा लिया तो फिर कोई तकलीफ नहीं होगी, आप कल से काम पर आ जाइए।'

मैं बहुत खुश थी। मुझे फिर नौकरी मिल गई। मुझमें आत्मविश्वास आ गया : अपने पैरों पर खड़े होने का भरोसा। मेरी जिन्दगी के सफर में जो एक अंधा मोड़ आ गया था, वह एक साफ और सपाट पथ में बदल गया। मेरे जीवन की गाड़ी फिर से चल पड़ी एक निश्चित और निश्चिन्त पटरी पर। मेरा सफर सुखद, सुगम और सुहावना हो गया।

मिस्टर वर्मा मेरा बड़ा आदर करते। मैं भी बड़ी मेहनत से काम करती। मेरे काम में कोई गलती नहीं होती। वो हमेशा मुझसे हंसकर बात करते, कभी कोई चुटकला भी सुना देते। मैं सोचती कितने खुश-मिजाज हैं, घमंड इन्हें छू तक नहीं गया है, और वैभव का कोई नशा नहीं। इसी तरह दो महीने बीत गए। एक दिन विमला जो उसी दफ्तर में काम करती थी, आई और बोली—

'क्या कर रही हो लता?'

'वर्मा जी ने सुबह से अभी तक कोई डिक्टेशन नहीं दिया है। खाली बैठे जी नहीं लग रहा।

'अभी तो डटकर काम करना चाहती हूं। मुझे तो अपने काम और मेहनत के वल पर ही दुनिया में खड़े होना है।'

'काम में तो तुम वहुत होशियार हो। लेकिन औरत को सफलता सिर्फ काम और मेहनत से नहीं मिलती।'

'यह क्या कह रही हो! तो और कैसे···'

'धीरे-धीरे सब मालूम हो जाएगा। सब पता चल जाएगा,' एक रहस्य-मय हंसी हंसते हुए कहकर चल दी। उसकी हंसी किसी खतरे के अलार्म की वजती हुई घंटी की तरह थी। मैं चौंक गई। सामने देखा तो वर्मा मेरी तरफ आ रहा था। वो मेरे पास आया। मैं खड़ी हो गई। उसने कहा—

'मैं जरा काम से वाहर जा रहा हूं। हो सकता है, पांच वजे तक न आ सकूं। तुम मेरा इंतजार करना। मुझे शाम को जरूरी काम करना है।'

इससे पहले कि मैं कुछ कहूं, वो यह कहकर चला गया। मेरा दिल धड़कने लगा। आज फिर वही वात। आज फिर वही सवाल। छुट्टी के वाद ठहरना होगा। छुट्टी के वाद जव दफ्तर में और कोई नहीं होगा। डिक्टेशन देने से पहले चाय वनानी होगी और फिर वह कहेगा—कितना सुहावना मौसम है···और उसके वाद फिर वही वात—तुम कितनी अच्छी हो, तुम कितनी खूबसूरत हो। काश मैं अच्छी न लगती···मैं सुन्दर न होती। हिरन को शिकार होना पड़ता है क्योंकि वह सुन्दर है, फूल को डाल से तोड़ लिया जाता है, क्योंकि वह लुभावना है। दुनिया खूबसूरती की दुश्मन है। खूबसूरती को जीने नहीं दिया जाता। स्त्री होना ही एक अपराध है और सुन्दरता एक अभिशाप। यह मर्द सब एक से ही होते हैं, यह सब एक ही सांचे में ढले हैं, एक ही मिट्टी के वने हैं। रूप के प्यासे, वासना के भूखे। जी चाहा वहां से भाग जाऊं। इससे पहले कि वह मुझे अपमानित करे, अपना हाथ मेरे शरीर पर रखे, इससे पहले कि वह मुझे कहे—'कल से तुम्हारी कोई जरूरत नहीं,' अभी समय है स्वयं क्यों न चली जाऊं!

फिर दूसरा विचार दिमाग में कौंध जाता। वर्मा तो देखने में वहुत शरीफ लगता है। हो सकता है उसे वाकई काम हो। डिक्टेशन देना हो। सव आदमी एक से नहीं होते। मैं नाहक उस पर शक कर रही हूं। इस तरह

अगर मैं नौकरी छोड़ती चली गई तो फिर क्या होगा ? अगर इसके बाद नौकरी नहीं मिली तो···एक अंधकार···एक गहरी खाई···एक···

एक विचार आता और लोप हो जाता। फिर दूसरा विचार आता और फिर पहला। दोनों विचारों में द्वंद्व—एक झगड़ा—एक वहम। एक अजीब उधेड़बुन—एक अजीब उलझन। इसी उधेड़बुन में, इसी उलझन में समय व्यतीत हो गया। पांच बजे गए। दफ्तर के लोग चले गये। मैं अकेली और चपरासी। सवा पांच बजे वर्मा आया। आते ही मुझे बुलाया और मैं अपनी नोटबुक और पेंसिल लेकर उनके पास उनके कमरे में गई। उन्होंने मौसम की बात छेड़ी। मैं चौंक गई। उन्होंने चाय मंगवाई। चपरासी को यह कहकर विदा किया कि वो चौकीदार से दरवाजा बन्द करवा देंगे। मैं डर गई। मैं बड़बड़ाई—

'सर···डिक्टेशन!'

जवाब में एक मुस्कराहट। एक घेरती हुई नजर और···

'पहले अपने हाथ की बनी हुई चाय तो पिला दो!' मैं कांप उठी। उसने एकदम मेरा हाथ अपने हाथ में पकड़ लिया।

'अरे, तुम तो कांप रही हो! सर्दी लग रही है!'

मैंने अपना हाथ छुड़ा लिया। वो कुर्सी से उठा। मेरे माथे पर हाथ रख दिया—'बुखार तो नहीं है।' इसके बाद अपनी बांहें मेरे गले में डाल दीं। मैं बौखला उठी। उसकी बांहों को झटके से अलग किया। मैंने कहा—

'आप मेरी बेबसी और लाचारी का अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं!'

'मैं तुम्हारी बेबसी को सुख में और लाचारी को अधिकार में बदल देना चाहता हूं।'

'मैं नौकरी करने आई हूं, अपने आपको बेचने नहीं।'

'तुम्हें कौन खरीद सकता है! दुनिया की सारी दौलत भी तुम्हारे सामने कुछ नहीं। यह तो दिल का सौदा है दिल का।'

'मुझे यह सौदा नहीं चाहिए।'

'नौकरी तो चाहिए या नहीं?'

'मुझे ऐसी नौकरी नहीं चाहिए?'

'मैं कौन-सा तुम्हें घर बुलाने गया था!'

'आपको शर्म आनी चाहिए। आप भोली-भाली लड़कियों को धोखा देते हैं। 'आप पहले क्यों नहीं बताते कि आपको स्टेनोग्राफर नहीं अपना दिल बहलाने के लिए लड़की चाहिए!'

'यह कहने की नहीं समझने की बात होती है।'

'आप लोग कितने नीच हैं, बदमाश हैं! आप लोग यह नहीं सोचते कि···'

शट अप! तुम जैसी पचासों लड़कियां मेरे आगे-पीछे घूमती हैं। मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।'

'मैं ऐसी नौकरी पर लानत भेजती हूं।'

'गेट आउट!'—वो चिल्लाया।

मैं फिर अपमानित हुई। मैं दफ्तर से बाहर निकाल दी गई। नहीं··· बल्कि फेंक दी गई। जैसे कोई रद्दी कागज।

मेरा अपराध···मैं सुन्दर थी···मैं अपना औरतपन बेचना नहीं चाहती थी, मैं खिलौना नहीं बनना चाहती थी। मनोरंजन और दिलबहलावे की एक वस्तु। मैं अपनी मेहनत और ईमानदारी से रोटी कमाना चाहती थी। मैं समझती थी, मैं अपने काम से अफसर को खुश कर सकती हूं, मैं अपनी मेहनत से उन्नति कर सकती हूं। पर यह मेरा भ्रम था, नादानी थी, नासमझी।

मैं अपने होस्टल आ गई। मैं रो पड़ी, खूब रोई···जी भर के रोई, आंसुओं से दिल हल्का होता है लेकिन दुख मिटता नहीं, मुसीबत टलती नहीं। आंसू पीड़ा की टीस को दबा देते हैं डुबो नहीं पाते।

अगले दिन से फिर वही चिन्ता। जीने-मरने का सवाल। मैं जीना चाहती थी और जीने के लिए पैसा चाहिए···पैसे के लिए नौकरी···नौकरी के लिए अपने आदर्श का बलिदान···अपने विचारों की हत्या···अपने आप से समझौता···सब कुछ सहने का समझौता···सब कुछ देने का समझौता··· सब कुछ···

पहले तो नौकरी मिलनी चाहिए···समझौते से समझौता करने की बात तो बाद में आएगी। उसी होस्टल में, मेरी एक सहेली बन गई थी···नाम था उर्मिला। उर्मिला एक सरकारी अफसर थी। उसके पति तीन साल के

लिए अमेरिका गए थे। कोई बच्चा नहीं था। इसलिए वो होस्टल में ही रहती थी। एक दिन उर्मिला ने मुझसे कहा कि उसके एक रिश्तेदार मिस्टर मनोहरलाल वहीं पर किसी कम्पनी के मैनेजर हैं। वो उससे मुझे कहीं नौकरी दिलाने के लिए कहेगी।

एक दिन उर्मिला मुझे अपने साथ उनके घर ले गई। मेरा उनसे परिचय करवाया। गोरा रंग, लम्बा कद, भरा हुआ जिस्म···मनोहरलाल एक आकर्षक व्यक्तित्व वाले आदमी थे। उनकी पत्नी भी वहां थी—किरण··· शरद पूर्णिमा के चाद की किरणों की सुन्दरता समेटे हुए···सरल···स्मार्ट एक सुन्दर जोड़ी। एक आदर्श दम्पति। दोनों ने मेरी बड़ी खातिर की आदर-सत्कार किया। मनोहरलाल ने मुझे दफ्तर में आने को कहा।

मैं अगले दिन उनके दफ्तर में गई और मुझे फिर नौकरी मिल गई तनखा चार सौ रुपये महीना। मैं अपने आपको भाग्यशाली समझने लगी चिन्ता मिट गई। संकट टल गया। हंसी-खुशी में दिन व्यतीत होने लगे। मैं अक्सर सोचती कि भगवान जो करता है अच्छा करता है। अच्छा हुआ जो मैंने पिछली नौकरी छोड़ दी। मुझे उससे ज्यादा अच्छी नौकरी मिल गई उससे बड़ी और बढ़िया कम्पनी में। मनोहरलाल मेरा बड़ा आदर करते और प्रायः यही कहते—'मेरे लिए जैसी उर्मिला वैसी तुम।' एक दिन उन्होंने भी मुझे शाम को दफ्तर के बाद रुकने के लिए कहा। मेरा दिल धड़का, लेकिन उनके सद्‌व्यवहार से मुझे उन पर विश्वास हो गया था उन्होंने शाम को एक घंटे तक काम करवाया और फिर मुझे अपनी कार में मेरे होस्टल छोड़कर अपने घर चले गए। मुझे कुछ पछतावा हुआ, अपने आपको धिक्कारा, मैंने नाहक उन पर संदेह किया था। कुछ दिनों में मुझे ऐसे लगने लगा कि वो मेरे अफसर ही नहीं मेरे शुभ चिन्तक, हितैषी, सगे सम्बन्धी हों।

इसी तरह दो महीने व्यतीत हो गये। मैं इतनी अच्छी नौकरी और इतने अच्छे अफसर मिलने पर कभी अपने भाग्य को सराहती और कभी भगवान का धन्यवाद करती। मेरे जीवन में एक बहार आ गई, जिसमें रंग-बिरंगे फूल खिलते, हंसी-खुशी की महक आती, आनन्द की हवा के झोंके आते। मैं हर तरह से सुखी-संतुष्ट थी।

एक दिन दफ्तर के दिन एक घंटे तक दफ्तर का काम करवाने के पश्चात् मनोहरलाल मुझे अपनी कार में होस्टल छोड़ने के लिए ले जा रहे थे। रास्ते में वो बोले—'लो भाई, याद आया। आज किरण ने कहा था कि वो तुमसे मिलना चाहती है। सुबह दफ्तर आते हुए उसने मुझसे कहा था, मैं तुम्हें शाम को घर पर ले आऊं। तुम उस दिन उर्मिला के साथ आई थीं, उसके बाद तो तुम आई ही नहीं। तुमने एक मुलाकात में ही उन पर न जाने क्या जादू कर दिया है कि वो तुमसे मिलने को बड़ी इच्छुक रहती है। पहले भी एक-दो बार उन्होंने कहा था लेकिन मैंने सोचा तुम्हें क्यों कष्ट दूं। पर सुबह तो उन्होंने कहा कि आज शाम को लता को जरूर लाना।'

मेरा जी चाहता था कि मैं कह दूं, फिर किसी दिन सही, लेकिन मैं यह कह न सकी और कहा—'चलिए, उनसे मिलने को तो मेरा भी जी करता है।' थोड़ी देर बाद वो अपने बंगले पर पहुंच गए। कार खड़ी की और मुझे अपनी बैठक में बैठा दिया। एक शानदार बैठक, एक आलीशान कमरा···साफ-सुथरा। वो मुझे बिठाकर अन्दर चले गए और फिर आकर बोले—'लो, किरण तो अपनी सहेली के साथ पिक्चर देखने चली गई। उसे यह याद ही नहीं रहा कि उसने कहा था कि शाम को तुम्हें लेकर घर ।'

मैंने कहा—'अच्छा, तो मैं चलूं।'

'एक प्याला चाय पीने के बाद चलते हैं। मैं तुम्हें होस्टल छोड़ आऊंगा।'

'चाय को मेरा मन नहीं कर रहा।'

'लेकिन मेरा मन तो कर रहा है। बस पांच मिनट···।'

उनका नौकर चाय ले आया। मैंने चाय बनाई और एक प्याला उनके आगे कर दिया। इतने में मुझे बाहर किसी के साइकिल उठाकर जाने की आवाज आई। यह शायद उनका नौकर था। चाय पीकर मैंने कहा—'अच्छा, अब मैं चलूं।'

'अभी इतनी जल्दी क्या है ? अभी न जाओ छोड़कर, अभी तो दिल भरा नहीं।'—उत्तेजना के स्वर में उसने कहा।

मैं हैरान हो गई—स्तब्ध। हीरे की डिबिया में सांप निकल आया—

अमृत की शीशी में कीचड़ निकला। उसने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा—'मैं अभी आया और फिर एक तीखी नजर से देखता हुआ अन्दर चला गया। तीखी नजर, जो छुरी की तरह चीरती हुई मेरे दिल में उतर गई। मेरा दिल धड़का, घबराया। मैं सहमी, डरी, कांपी। जी चाहा, वहां से दौड़ जाऊं, भाग जाऊं, उड़ जाऊं। लेकिन कुछ न कर सकी। सोचने लगी, आज फिर वही सवाल। नौकरी छोड़ दूं। उसके बाद कोई और नौकरी, और वहां भी यही होगा। नौकरी नहीं करूं, क्या करूं? कहां जाऊं? कैसे जिऊं? आंखों के सामने अंधेरा छा गया, सिर चकराने लगा।

कुछ क्षण के बाद उसने चुपके से पीछे से आकर अपने गर्म दहकते हुए होंठों से मेरे गालों पर अपने पाप की मोहर लगा दी। मैं एकदम खड़ी हो गई।

'मैं आपको ऐसा नहीं समझती थी।'

'क्यों मुझमें क्या कमी है? क्या मैं आदमी नहीं, मेरे दिल नहीं!' उसकी सांस ज़ोर से चल रही थी।

मैं पीछे हटी। वो आगे बढ़ा।···हटती गई···बढ़ता रहा···मैंने हाथ जोड़े···गिड़गिड़ाई···मिन्नत की···मुझे छोड़ दो···सब बेकार···सब व्यर्थ। झपटकर मुझे बाहों में कस लिया—मैं झटके से अलग हो गई। जी चाहा उसके कमरे के पर्दे फाड़ डालूं, शीशों पर पत्थर बरसाऊं···उसे नोच डालूं···पर नहीं···नहीं, मैं कुछ न कर सकी।

उसने मुझे एकदम गोद में उठा लिया। मैं तड़पी, फड़फड़ाई—वो मुझे उठाकर अपने बिस्तर पर ले गया।

जी चाहा रोऊं, चीखूं, चिल्लाऊं···पर वो भी न कर सकी। आंखों के सामने अंधेरा छा गया। मैं बेहोश-सी हो गई और फिर···उसने मुझे मसल डाला···रौंद डाला···जब होश आया···तब तक मैं लुट चुकी थी···मैं सब कुछ खो चुकी थी···बर्बाद हो चुकी थी।

दूसरे दिन मैं दफ्तर नहीं गई। मुझे दफ्तर से नफरत हो गई, नौकरी से नफरत हो गई। पुरुष जाति से नफरत हो गई, दुनिया से नफरत हो गई।' मेरे आदर्शों के महल गिर गए, मेरे विचारों की इमारत ढह गई। मेरे संयम का बांध टूट गया। नैतिकता एक थोथी और खोखली दीवार लगने

जो किसी को सहारा नहीं दे सकती। मेरे नेकी और बुराई के पैमाने बदल गए। मैंने सोचा, अगर मुझे बिकना है तो साढ़े तीन सौ रुपये महीने पर क्यों बिकूं ? मुझे अगर लाज-शर्म का घूंघट उठाना ही है तो किसी की आज्ञा पर क्यों, किसी के इशारे पर क्यों ? अगर मुझे अपनी जवानी की नुमाइश से ही पैसा कमाना है, अगर जवानी की नुमाइश से ही धन एकत्रित करना है, अगर मुझे औरतपन बेचकर ही जीवित रहना है, तो मैं पूरी क्यों न वसूल करूं। मैं अपनी सुन्दरता का पूरा फायदा क्यों न उठाऊं। यह कीमत सोचते-सोचते लता मर गई और उसकी राख पर जन्म लिया लूसी ने—वो लूसी जिसने रूप और सौंदर्य की मंडी में अपनी सुन्दरता को तराजू में रख दिया। जिसने अपने अंग-प्रदर्शन पर टिकट लगा दिया। जिसने अपने शरीर की चमक-दमक नीलाम कर दी। जिसने अपनी जवानी को सिक्कों में ढाल दिया।

यह कहते-कहते उसके हृदय की पीड़ा दो बूंदों में सिमट कर आंखों से बाहर आ टपकी और इन्हें थाम लिया अनिल के हाथों ने। अनिल ने अपना हाथ उसी तरह रहने दिया और यह बूंदें धीरे-धीरे विलीन हो गई उसकी रगों में, समा गई उसके खून में और तालमेल करने लगीं उसकी हृदय की धड़कनों के साथ।

८

लूसी और अनिल अब एक जबर्दस्त आकर्षण महसूस करने लगे। चुम्बक-सा आकर्षण। यह आकर्षण उन्हें बरबस एक दूसरे के पास खींच लाता। उन्हें मिलने पर मजबूर कर देता। वह रोज मिलने लगे। कभी अपनी कहानी सुनाते और कभी दूसरों की। इस तरह सुनते-सुनते वो एक दूसरे के नजदीक आ गए·· बहुत नजदीक। दोनों के दिल एक साथ धड़कने लगे। लूसी का कष्ट अनिल का कष्ट हो गया और अनिल का सुख लूसी का सुख। दोनों मिलते तो खूब घुल-मिलकर बातें करते और जब अलग होते तो एक दूसरे के सपने देखते। लूसी को अब नाचते हुए दर्शकों की जगह अनिल की तसवीर दिखाई देती और उसमें एक नया उत्साह आ जाता, एक नई उमंग भर जाती, उसके पैरों में एक नई गति आ जाती। उसे लगता, वह नाच रही है अपने अनिल को रिझाने के लिए। उसके नृत्य में एक नई लहर आ गई।

अनिल के लेख अब अधिकतर रोमांटिक होने लगे। उसकी कहानियां अधिक भावपूर्ण होने लगीं। उसके लेखों में एक निखार आ गया और उसकी लेखनी में नयापन।

एक दिन दोनों झील के किनारे बैठे हुए थे। दोनों चुप। दोनों एक दूसरे में खोये हुए। सहसा अनिल ने कहा—'हिलो नहीं।'

'क्यों ?'

'मैं तुम्हारे प्रतिबिंब को देख रहा हूं।'

'मुझे ही देख लो ना!'

'तुम्हें देखा नहीं जाता।'

'क्या मतलब ?'

'तुम्हारे चेहरे पर इतना नूर है कि आखें चौंधिया जाती हैं।'

'लूसी ने पानी को हाथ से हिला दिया।

'देखो अब क्या देखते हो।'

'यह छवि तो अब मेरे आंखों में बस गई है इसे कोई नहीं मिटा सकता।'

'अब!'

'नहीं, बिल्कुल झूठ।'

दोनों की नज़रें टकराईं और दोनों हंस दिये। लूसी ने लहरों की तरफ देखते हुए कहा—

'इन लहरों को देखो किनारे से मिलने के लिए कितनी आतुर हैं!'

'और किनारे भी तो इन्हें आलिंगन में भरने के लिए बरसों से बाहें फैलाये हुए हैं।'

'ओह तुम तो कवि हो।'

'और तुम कवि की कल्पना!'

अनिल उठा। हाथ का फूल लूसी के जूड़े में लगा दिया। एक सिहरन, एक लहर लूसी के शरीर में दौड़ गई···उसे लगा किसी ने उसे गुदगुदा दिया···उसके हृदय की वीणा के तारों को छेड़ दिया और उसमें से निकली एक मधुर संगीत लहरी, जिसमें वह खो गई, जिसने उसे मदहोश कर दिया।

'यह क्या किया?'

'फूल की आकांक्षा पूरी कर दी।'

'क्या मतलब?'

'नगीना अंगूठी में ही अच्छा लगता है।'

लूसी ने अनिल को देखा और मुस्करा दी और मुस्कराहट की तरंगें अनिल के हृदय में उतर गईं। अनिल फिर बैठ गया। उसने लूसी का हाथ अपने हाथ में लेते हुए पूछा:

'तुमने शराब सचमुच छोड़ दी!'

'हां।'

'क्यों छोड़ दी?'

'क्योंकि अब इसकी ज़रूरत नहीं। मैं शराब पीती थी अपना गम

भुलाने के लिए, अपने हृदय की पीड़ा मिटाने के लिए।'

'तो क्या अब दर्द मिट गया ?'

'यह तो नहीं कह सकती, लेकिन दर्द की चुभन महसूस नहीं होती। फिर तुम्हें मेरा शराब पीना अच्छा नहीं लगता।'

'मुझे तो तुम्हारा नाचना भी अच्छा नहीं लगता।'

'तो नाचना भी छोड़ दूंगी।'

अनिल को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने फिर आश्चर्य से पूछा—

'क्या कहा, नाचना भी छोड़ दोगी !'

'हां, बहुत नाची हूं, बहुत नचाया है दुनिया ने। अब थक गई हूं।'

अनिल प्रफुल्लित हो उठा। उसे लगा जैसे वह जिस मूर्ति की पूजा कर रहा था वह सजीव हो उठी। उसने भावातुर होकर कहा—

'मैं तुमसे एक सवाल पूछूं !'

'पूछो न, मैं तो तुम्हारे सवालों का इंतजार कर रही हूं।'

मैं आज से तुम्हें लता कहूंगा।'

'लता तो मर चुकी है, अनिल। उसे दोबारा जिन्दा न करो।'

'लता मरी नहीं, लता ने लूसी का मुखौटा पहन लिया है, एक आवरण ओढ़ लिया है। ये मुखौटा, यह आवरण उसे मुझसे छिपा नहीं सकते। मेरी निगाह केवल मुखौटा पर ठहर नहीं जाती, मेरी नजर आवरण पर रुक नहीं जाती, वह उसके भीतर भेदकर लता को देख रही है। लता जो लूसी का असली रूप है। मेरे लिए तो तुम लता हो।'

'लता को बढ़ने और फूलने के लिए एक सहारा चाहिए।'

'सहारा नहीं, साथी कहो।···'

'मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूं।'

'कहो न, मैं तो कब से वह बात सुनने के लिए आतुर हूं।'

'मैं···मैं···तुमसे विवाह करना चाहता हूं।'

इस बात को सुनकर लूसी की नजर झुक गई। गालों पर हल्की लज्जा की लाली दौड़ गई। लूसी उठ खड़ी हुई। अनिल भी उठ गया। लूसी दो पग आगे चली। गर्दन घुमाई और बोली—

'क्या तुम मेरा अतीत भूल सकोगे ?'

अनिल जोर से हंस पड़ा और बोला—'अतीत मर चुका है। मुझे मृत्यु से नहीं जीवन से प्यार है। अतीत को अतीत में ही रहने दो। आओ हम दोनों अपने-अपने भविष्य को एक दूसरे से जोड़ दें।'

अनिल ने अपना हाथ लूसी की ओर बढ़ाया और लूसी ने उसे थाम लिया।

९

लता ने लूसी का चोगा उतार फेंका। वह आवरण हटा दिया। वह मुखौटा उतार फेंका। अब वह नशीली लूसी से लजीली लता हो गई। लूसी, जो दर्शकों को रिझाने के खेल दिखाती, अपना अंग-अंग फड़काती, अपनी पिंडलियों और टांगों से कपड़ा हटाकर बिजली गिराती, वह लूसी फिर से लता हो गई। लता जो किसी की नजर पड़ने से सिकुड़, सिमट और सिहर जाती थी। लता जो सुगम, सरल, सुलभ लज्जा से भरपूर थी। वह अब चौराहे की रोशनी नहीं बल्कि किसी के घर का उजाला बनना चाहती थी। किसी का विश्वासघात लता को लूसी की दुनिया में भगा ले आया था, लेकिन अनिल के निश्छल और निष्कपट प्रेम ने लूसी को लता की दुनिया में वापिस भेज दिया''वह दुनिया जिसे लूसी ने त्याग दिया था और पीछे छोड़ दिया था। शराब वह पहले ही छोड़ चुकी थी, अब नाचना भी बन्द कर दिया। वह अब स्वप्न देखती थी एक छोटे-से घर का, जिसमें वह होगी, अनिल होगा। वह प्यार में सांस लेगी, अनुराग में जिएगी, उसका दर्द किसी और का भी दर्द होगा और किसी और की पीड़ा में वह कराह उठेगी। ऐसे दो शरीर होंगे जो सुख में एक साथ जिएंगे और दुख में एक साथ डुबकियां लगाएंगे। वह घर नहीं बल्कि उसके लिए मंदिर होगा जिसमें वह अपने आपको अपने देवता पर अर्पण कर देगी। उसकी दुनिया में इसी के ख्याल होंगे, ख्वाब होंगे, वह उसके लिए जिएगी, उसके ही लिए मरेगी। भीड़भाड़ से दूर, वाह-वाह के शोर से परे, बाजे और साज की आवाजों से हटकर उसकी एक अपनी अलग दुनिया होगी, जिसमें झरने की चंचलता नहीं, झील के पानी की [illegible] होगी। प्यार के बुलबुले उठेंगे, प्रेम की लहरें अंगड़ाइयां लेंगी। [illegible] के पानी की तरह एक पत्थर पर ठोकर नहीं खानी पड़ेगी।

वह अब एक स्वप्न देखती रहती···सोते···जागते···उसकी आंखों के सामने एक छवि बैठती रहती···उसकी अपनी एक तस्वीर···मांग में सिंदूर···गले में मंगल-सूत्र···हाथों में मेंहदी···सिर पर लाज का पहरे-दार एक छोटा-सा घूंघट। वह तस्वीर देखती रहती और फिर खो जाती। अरमानों के मेले में, झूलती उमंगों के झूले में, उड़कर पहुंच जाती ऐसे आकाश में जिसमें मोहब्बत का चांद होता और झिलमिलाते प्यार के तारे।

आंधी चल रही थी, बिजली चमक रही थी, ज़ोर की वर्षा हो रही थी और लूसी इनसे बेखबर-बेसुध अपने सपनों में खोई हुई थी कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। लूसी चौंकी और दरवाज़ा खोला तो देखा अनिल खड़ा है। अनिल अन्दर आ गया। सिर से पैर तक भीगा हुआ।

'ओह, तुम तो बिल्कुल भीग गए!'

'पानी में तो आदमी भीगता ही है।'

'इस पानी और आंधी में आने की क्या ज़रूरत थी?'

'इसका मतलब यह कि आज मैं तुमसे मिलता ही नहीं। तुम्हें अच्छा नहीं लगा तो मैं वापिस चला जाता हूं। पानी बन्द हो जाएगा तो फिर आ जाऊंगा।'—नाराज़गी का अभिनय करते हुए अनिल ने कहा।

'ओह तो तुम्हें रूठना भी आता है। किससे सीखा है; बताओ ना?' यह कहकर लूसी कमरे में गई और एक तौलिया ले आई और अनिल को दे दि ा।

'पहले आप इससे हाथ-पैर पोंछ डालो और फिर···पर तुम क्या पहनोगे? मेरे पास मर्दाने कपड़े तो हैं ही नहीं।'

लूसी अपने कमरे में गई और अपनी साड़ी उठा लाई और अनिल को देते हुए कहा—

'लो इसका तहमत बनाकर पहन लो।'

अनिल ने अपने कपड़े उतार दिए और लूसी की धोती पहनकर बैठ गया। लूसी ने अनिल की बुशर्ट और पैंट निचोड़ कर पंखे के नीचे रख दिए।

'टेरीकाट के कपड़े हैं, अभी सूख जाएंगे।'

'न भी सूझे, तो मैं तुम्हारी साड़ी बांधकर चला जाऊंगा।'

दोनों ने एक दूसरे को देखा। नज़रें मिल गईं और दोनों हंस दिए।

लूसी उठी और अनिल के लिए एक प्याला चाय बना लाई। अनिल ने पूछा—'क्या लक्ष्मी घर में नहीं है?' लूसी ने बताया कि वह अपने किसी रिश्तेदार के यहां दोपहर को गई थी और अभी तक नहीं लौटी।

अनिल चाय की चुस्कियां ले रहा था और लूसी उसे देख रही थी, जैसे जौहरी अपने सबसे मूल्यवान हीरे को देखता है, मदारी अपने डमरू को देखता है और कंजूस अपने धन को।

'चाय कैसी बनी है?'—लूसी ने पूछा।

'बहुत अच्छी, बहुत बढ़िया।'

'सच कहो न!'

'सच ही कह रहा हूं, ऐसी चाय तो आज तक मैंने पी ही नहीं, चाय तो बहुत ही अच्छी, बस ज़रा मीठी ज़्यादा है, पत्ती कम है और दूध जला हुआ।'

'सच कह रहे हो?'

'जी नहीं, झूठ कह रहा हूं।'

'सच, सच, बताओ न!'

'मैं सच कहता हूं कि मैं झूठ नहीं बोलता और ना ही बोल रहा हूं।'

'तुम्हें बातें बनानी तो बहुत आती हैं।'

'और तुम्हें क्या आता है?'

'मुझे तो कुछ नहीं आता, चाय तक बनानी नहीं आती।'

'मैं तो मज़ाक कर रहा था, चाय तो सचमुच बढ़िया है।'

दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। नैन मिले। नज़रों ने सवाल पूछे। निगाहों ने जवाब दिया। दोनों संतुष्ट। दोनों खुश। यह खुशी होंठों पर बिखर गई और हंसी बनकर फूट पड़ी।

'मैं एक बात कहूं?'—अनिल ने चाय का प्याला रखते हुए कहा।

'जी नहीं।'

'क्या मतलब!'

'मतलब यह कि एक बात नहीं, कम से कम दो बात कहो।'

'मुझे बम्बई में एक पत्रिका की संपादक की जगह मिल गई है। तीन हज़ार वेतन। मुझे कल ही बम्बई जाना होगा।'

'मुबारिक हो!'—लता ने प्रसन्न होकर कहा।

एक महीने बाद मैं आऊंगा और फिर तुम्हें साथ ले जाऊंगा और उसके बाद कोई भी मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकेगा।'

'एक महीना यानी कि तीस दिन। तीस दिन तो बहुत होते हैं।'

'मैं तुम्हें रोज़ पत्र लिखूंगा।'

'खाओ मेरी कसम।'

'क्यों, मुझ पर विश्वास नहीं है!'

'यह मत कहो। ये तीस दिन तो मैं तुम्हारे पत्रों के सहारे ही गुज़ार दूंगी।'

लता ने यह कहते हुए अपना सिर अनिल की छाती पर रख दिया और अनिल की उंगलियां उसके रेश

१०

अनिल उसके पास नहीं था, पर फिर भी वह सदा अनिल के साथ रहती। लता ने शराब छोड़ दी, नाचना छोड़ दिया। अनिल उसके दिल और दिमाग में बस गया था। उसकी हर धड़कन में समा गया था। उसके कानों में शहनाई के स्वर गूंजने लगते। वह स्वर जो उसे अनिल के साथ एक पवित्र बंधन में बांध देंगे। उसे और अनिल को एक कड़ी में पिरो देंगे। उसके बाद उन्हें कोई अलग नहीं कर सकेगा। वह अपना तन-मन उसे समर्पण कर देगी। उसका अपना अलग एक घर होगा। वह उस घर को सजाएगी, संवारेगी। सुबह जब अनिल अपने काम पर जाएगा तो वह उसके लिए खाना तैयार करेगी। उसके कपड़े निकालकर देगी और फिर वह कहेगी—'यह पेंट नहीं, दूसरी पेंट पहन जाओ। यह कमीज़ मैली है··· ठहरो इस कमीज का तो बटन टूट गया है'···वह सुई-धागा लेकर उसका बटन लगाएगी और जब वह उसके सीने के पास सुई ले जाकर धागा तोड़ेगी तो वह उसका मुंह चूम लेगा और वह फिर कनखियों से देखती हुई कहेगी—'तुम बड़े नटखट हो।' शाम को जब वह घर आएगा तो वह दरवाजा खोलते ही उसको अपनी बाहों में जकड़ लेगी। किसी दिन देर से आया तो वह रूठ जाएगी। वह एक तरफ बैठ जाएगी, फिर वह चुपके से पीछे से आएगा और अपनी बाहें उसके गले में डाल देगा। वह छुड़ाकर एक तरफ हो जाएगी। वह कहेगी—

'पहले पूछो तो सही क्यों देर हो गई!'

'मुझे कुछ नहीं पूछना।'

वह फिर मुझे मनाएगा, मुझसे माफी मांगेगा, आइन्दा समय पर घर आने का वायदा करेगा और फिर वह अपनी हंसी नहीं रोक पाएगी। वह हंस देगी। और फिर वह उससे लिपट जाएगी। उसके इस प्यार के

संसार में प्यार की हवा होगी, प्यार के झोंके होंगे और प्यार के झूले होंगे। फिर उनके इस प्यार के बाग में बहार आएगी। एक नन्हीं-सी कली खिलेगी। उन्हें एक खिलौना मिल जाएगा। जिसे वह लोरी देकर सुलाएगी, चूमकर उठाएगी। फिर वह धीरे-धीरे बड़ा होगा और फिर वह भी अपने पापा को टाटा करेगा।

उसे हर रोज़ अनिल का एक पत्र मिलता और वह भी उसे रोज एक पत्र लिखती। डाकिया सुबह ११ बजे तक आ जाता। वह सुबह उठकर ११ बजने की प्रतीक्षा करती। ११ बजे के बाद अनिल का पत्र बार-बार पढ़ती और फिर रात को उसे पत्र लिखती। उसके विरह के दिन कुछ इस तरह व्यतीत हो रहे थे कि एक शाम को चार बजे अनिल का पत्र पढ़ते-पढ़ते उसे पेट में बहुत जोर का दर्द महसूस हुआ। उसने थोड़ा-सा चूर्ण खा लिया और अनिल का पत्र पढ़ने लगी। पांच दिन के बाद अनिल आ रहा था। उसका अनिल, उसीका अनिल। अनिल जो अब उसकी आकांक्षाओं का प्रतीक था, अनिल जो उसके सपनों का केन्द्र था, अनिल जो उसके रोम-रोम में समा गया था, अनिल जो उसके अंग-अंग में बस गया था, अनिल जो अब उसके हृदय की धड़कन की आवाज़ था। अनिल जो अब उसके रक्त का प्रवाह था, अनिल जिसमें वह खो जाना चाहती थी, अनिल जिसमें वह घुल कर विलीन हो जाना चाहती थी। उसने पत्र पढ़ा, फिर पढ़ा, पढ़ती गई और फिर पत्र को चूम लिया। उसे फिर दर्द महसूस हुआ। उसका मन कर रहा था कि वह नाचे, गाए, झूम उठे, पर यह दर्द, इस दर्द को आज ही होना था, इसी समय होना था, दर्द बढ़ता गया और उसे एक दिन डाक्टर के पास जाना पड़ा। डाक्टर ने उसे दवाई दी और दूसरे दिन अस्पताल आने के लिए कहा। दूसरे दिन सुबह उठी तो फिर वही दर्द। वह अस्पताल गई, उसका एक्स-रे लिया गया, खून भी जांच के लिए लिया गया।

वह दोपहर को अस्पताल से घर लौटी। अनिल का पत्र आ चुका था। उसने पढ़ा, उसमें उसने लिखा था कि वह अधिक दिन दिल्ली नहीं ठहरेगा। बस एक सप्ताह में वह उससे विवाह कर लेगा। उसने बम्बई में एक फ्लैट का प्रबंध भी कर लिया है।···लता फिर अपने सपनों में खो जाना

चाहती थी, लेकिन दर्द ने फिर उसे आ दबाया। यह दर्द तो अब उसके पीछे पड़ गया था, कब खत्म होगा यह दर्द, कब पीछा छोड़ेगा उसका? उसने दवाई ली। लेकिन दर्द ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। कैंपसून खा लेती तो कुछ कम हो जाता।

वह रोज़ अस्पताल जाती। डाक्टर उसे अच्छी तरह से देखते और पाचवें दिन जब वह डाक्टर के पास गई तो डाक्टर ने बड़ी गम्भीर मुद्रा में पूछा—

'आप अकेली अस्पताल आती हैं? आपके साथ कोई घर वाला नहीं आता?'

'डाक्टर साहब, मैं अकेली ही हूं। मेरा इस दुनिया में कोई नहीं।' कहने को तो वह यह कह गई लेकिन उसी क्षण उसे लगा कि वह झूठ बोली है। उसने फिर कहा—'नहीं, नहीं, डाक्टर साहब, मेरे वो हैं, वो बाहर गए हैं, बम्बई। लेकिन आप इतने गम्भीर क्यों हैं, क्या बात है?'

'कैंसर।'—डाक्टर ने कहा।

'कैंसर!'—लता ने इस शब्द को दोहराया।

'आप चिन्ता न कीजिए। हम इलाज करेंगे। आप रोज़ अस्पताल आइए।'

उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया, सिर चकराने लगा। भाग्य का यह कैसा खेल! विधाता का यह कैसा विधान! पतझड़ के बाद जब वृक्ष में नई कोंपलें आने लगी तो किसी ने वृक्ष में आग लगा दी! चिड़िया जब बरसों बाद पिंजरे से निकली तो बाज ने झपट्टा मारा! डूबते-डूबते जब किनारा हाथ लगा तो मगरमच्छ ने पैर पकड़ लिया! फूलों की सेज पर पैर रखते ही सांप ने डंक मार दिया!

वह टूटी हुई, थकी हुई, हारी हुई-सी घर पहुंची तो अनिल का पत्र मिला। अनिल आज शाम को आ रहा था। उसकी गाड़ी लगभग नौ बजे पहुंचनी थी। अनिल ने लिखा था कि विवाह के दूसरे दिन शाम को वह अशोका होटल में पार्टी देना चाहता है। पत्र पढ़ते-पढ़ते वह रो पड़ी ···फूट-फूट कर रोई। थोड़ी देर के बाद जब वह कुछ अपने आपको संभाल पाई तो सोचने लगी कि अनिल को जब यह मालूम होगा तो उस

पर क्या बीतेगी ! वह यह वज्रपात किस तरह सहन कर सकेगा ? जब उसे मालूम होगा कि उसकी प्रेम की प्रतिमा के टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं तो उसकी क्या दशा होगी। वो भावुक है, उसका प्रेम सच्चा है। उसका अनिल बिखर जाएगा, टूट जाएगा और फिर पागल भी हो सकता है। नहीं, नहीं, उसका अनिल पागल नहीं होगा। वह उसे पागल नहीं होने देगी। अनिल ने उससे प्यार किया है तो क्या उसे उससे प्यार करने की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। उससे प्यार करना अपराध है। वह एक जलती हुई शमा है जो स्वयं जलती रहती है और जो उसे प्यार करता है उसे वह झुलस देती है। लेकिन इसमें उसका क्या दोष है ? वह निरपराध है। उसका अपना जीवन बर्बादियों की एक कहानी है। लेकिन वह उसे बर्बाद न होने देगी। वह क्या करेगी ! जो स्वयं टूट चुका हो वह दूसरे को क्या समेटेगा ! जो स्वयं गिर चुका है वह दूसरे को क्या संभालेगा ! अपने ही दर्द से छटपटाता हुआ दूसरे की पीड़ा कैसे दूर करेगा। कुछ भी हो, वह अनिल को टूटने नहीं देगी। उसे गिरने से बचाएगी, उसे पागल नहीं होने देगी, उसे दर्द से तड़पने नहीं देगी। पर कैसे, किस तरह, क्या करे ? वह शहर छोड़कर चली जाए। अनिल के आने में अब केवल कुछ ही घंटे बाकी हैं। यह नहीं हो सकता। फिर इस तरह गायब होने से तो वह जीवन भर तड़पता रहेगा। उम्र भर उसके जीवन में एक सस्पेंस रहेगा। फिर वह क्या करे···कुछ नहीं समझ आता···कुछ नही सूझता। अचानक एक विचार···एक खयाल···एक सुझाव। वह उसके प्रेम का अंत कर दे ! उसके प्यार को खत्म कर दे ! उसके प्यार को नफरत में बदल दे ! अगर अनिल को उससे घृणा हो जाए तो उसके मरने पर उसे दुख नहीं होगा। उसके मरने के बाद उसकी याद उसे नहीं तड़पाएगी। वह उसे बेवफा समझकर दूसरी शादी कर लेगा और फिर वह सब कुछ भूल जाएगा। अपने परिवार में रम जाएगा। उसके जीवन में हंसी-खुशी होगी। यही तो वह चाहती है। मरने से पहले वह यह हँसी-खुशी ही तो उसे उपहार में भेंट करना चाहती है।

इसी अधेड़बुन में सात बज गए। अनिल के आने में सिर्फ दो घंटे रह गए। वह उठी। उसने एक अच्छी-सी साड़ी पहनी, श्रृंगार किया,

सज-संवर कर लक्ष्मी को पुकारा और कहा—

'अगर अनिल बाबू आएं और मुझे पूछें तो कह देना मैं डांस करने गई हूं।'

'डांस करने!'—आश्चर्यचकित होकर लक्ष्मी ने यह शब्द दोहराए, 'डांस करना तो आपने छोड़ दिया!' 'पर अब फिर शुरू कर दिया है।'—यह कहकर लता बाहर आ गई और फिर चारों ओर देखकर तेज कदमों से मंजिल की ओर चल पड़ी।

लक्ष्मी इस पहेली में उलझी हुई आश्चर्यचकित लता को जाते हुए देखती रही।

अनिल रात को फ्रण्टियर मेल से दिल्ली पहुंचा। गाड़ी के प्लेटफार्म पर आते ही वह खिड़की के पास खड़ा हो गया। उसे पूर्ण आशा थी कि लता उसे लेने के लिए स्टेशन पर जरूर आई होगी। उसने बड़ी उत्सुकता से प्लेटफार्म पर खड़े हुए आदमियों को देखा, पर लता नहीं दिखाई दी। गाड़ी रुकी और वह गाड़ी से बाहर आकर खड़ा हो गया। कुछ देर इस आशा में कि शायद चलती गाड़ी से वह उसे नहीं देख पाया हो, वहीं खड़ा रहा। थोड़ी देर के बाद जब उसे लता न मिली तो वह अपना सामान उठवाकर स्टेशन से बाहर आ गया। टैक्सी की, और अपने घर पहुंच गया। रास्ते भर वह यही सोचता रहा कि लता स्टेशन पर क्यों नहीं आई। उसने मुंह-हाथ धोया और लता से मिलने चल पड़ा। वह लता के लिए एक बढ़िया गुलाबी रंग की साड़ी लाया था। वह रास्ते में सोचता रहा कि वह यह साड़ी पहनकर कैसी लगेगी।

कुछ देर बाद वह लता के मकान पर आ पहुंचा। घंटी बजाई। उसने सोचा कि जैसे ही लता दरवाजा खोलेगी वो उससे लिपट जाएगा और उसके अधरों को चूम लेगा। घर में लक्ष्मी के सिवाय कोई नहीं होगा। लक्ष्मी से कैसी शर्म! फिर लक्ष्मी तो जानती है कि वह विवाह कर रही है। लक्ष्मी ने दरवाजा खोला। लक्ष्मी ने 'नमस्ते' कहा। अनिल 'नमस्ते' कहकर एकदम अन्दर चला गया। पर लता उसे कहीं नहीं दिखाई दी। वह कुर्सी पर बैठा और जोर से बोला—'लता यह आंख-मिचौनी खेलने का समय

नहीं है, यह छिपने का अवसर नहीं है।' लक्ष्मी आई और उसके पास आकर चुपचाप खड़ी हो गई। उसने पूछा—

'क्या बात है! लता कहां है?'

'वह घर पर नहीं है।'

'कहां गई है? मेरे आने की चिट्ठी उन्हें मिल गई थी!'

'मालूम नहीं, साहब।'

'मालूम होता है उसे चिट्ठी ही नहीं मिली।'—उसने यह कहकर एक मीठी गाली डाकखाने वालों को दी और फिर पूछा—

'वह कहां गई हैं? कब तक आएंगी?'

'वह नाच करने गई हैं। थोड़ी देर तक आ जाएंगी।'

'नाचना तो उन्होंने छोड़ दिया था। तू सच-सच बता वह कहां गई हैं?'

'मैं सच कह रही हूं।'

'तो नाचना कब से शुरू किया है? कैसे शुरू किया? क्यों शुरू किया?'

'आप उन्हीं से पूछ लेना।'

लक्ष्मी यह कहकर रसोई में चली गई। अनिल कुर्सी से उठ बैठा। वह कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। सोचता हुआ...छटपटाता हुआ...अथाह सागर में डुबकियां लगाता हुआ। वह कुछ क्षण के बाद फिर कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपना माथा पकड़ लिया। उसे लगा जैसे किसी ने उसे घूमती हुई कुर्सी पर बैठाकर बिजली से बहुत ज़ोर से कुर्सी घुमा दी हो और फिर उसे सुनाई दी घंटियों की आवाज़...घड़ियालों का नाद।

थोड़ी देर बाद लता आ गई। लता को देखकर वह आगे बढ़ा। लता एक तरफ हो गई। लता लड़खड़ा रही थी।

'हैलो, अजय!'—लता ने नशे में शराबी की तरह कहा।

'तुमने फिर पीना शुरू कर दिया?'—अनिल ने पूछा।

'हां।'

'क्यों?'

'मेरी मर्ज़ी, तुम चाहो तो तुम भी पियो।'

'तुम डांस करके आई हो?'

'हां, आज तो मैंने वह डांस किया कि लोग देखते ही रह गए।'

'तुम तो कहती थीं कि डांस करना छोड़ दिया है!'

'अनिल, तुम तो बहुत भोले हो। मैंने कहा और तुमने मान लिया!'

'मैं तो डांसर हूं। कैबरे डांसर। डांसर अगर डांस नहीं करेगी तो और क्या करेगी!'—यह कहकर वह बड़े ज़ोर से हंसी…एक शराबी की हंसी…एक खलनायिका की हंसी…किसी का मज़ाक उड़ाने वाली हंसी…तीर की तरह पैनी हंसी।

अनिल तिलमिला उठा। उसे लगा कि किसी ने उसे कांटों की सेज पर धक्का दे दिया हो। किसी ने बिजली की सजीव तार पकड़ा दी हो।

'तुम एक महीने में कितना बदल गई हो!'

'तुम्हें क्या मालूम कि हम एक महीने में क्या हो गया है!'

'वही तो तुमसे पूछ रहा हूं।'

'मुझसे क्यों पूछते हो! इसमें मेरा कोई दोष नहीं। तुम यह क्यों भूलते हो कि मैं डांसर हूं और डांसर किसीकी नहीं होती।'

'तुमने तो मुझसे शादी करने का वायदा किया था।'

'तो तुमने उसी वक्त मुझसे शादी क्यों नहीं की?'

'अब क्या हो गया है?'

'अब मैं किसी और से शादी का वादा कर चुकी हूं। लक्ष्मी, इनके लिए शर्बत लाओ। यह शराब नहीं पीते।'

'मैं कुछ नहीं पियूंगा।'—अनिल ज़ोर से चिल्लाया—'मैं पूछता हूं कि वो कौन है जिससे…'

'एक आदमी है…तुमसे ज़्यादा अच्छा है, तुमसे अधिक सुन्दर।'

'मुझसे ज़्यादा अच्छा है!'

'तुमसे अच्छा न होता तो मैं तुम्हें क्यों छोड़ती? उससे क्यों शादी का वादा करती? मैं घाटे का सौदा नहीं करती।'

'इस एक महीने में…'

'एक महीना तो बहुत होता है। हम तो आठ दिन में आठ शादियां कर लेते हैं।'

'बन्द करो, यह बकवास। मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतनी नीच हो।

लक्ष्मी शर्बत का एक गिलास ले आई। अनिल ने वह शर्बत का गिलास लक्ष्मी के हाथ से छीनकर जमीन पर पटक दिया। और वह गिलास चूर-चूर हो गया, ठीक उसके दिल की तरह। पैकेट में से साड़ी निकाली और फाड़कर फेंक दी।

'तुम आखिर एक रंडी ही हो, कुतिया।'—यह कहकर अनिल बाहर चला गया। अनिल को लगा जैसे उसे किसी ने पहाड़ की चोटी पर से धक्का दे दिया हो। सड़ाक···सड़ाक किसी ने गर्म सलाखें उसके जिस्म पर दाग दी हों। किसी ने उसकी नसों से एकदम खून निचोड़ लिया हो।

अनिल के जाने के बाद वह मुस्कराई। दर्द से कराहती हुई मुस्कान। उसने फटी हुई साड़ी के टुकड़े इकट्ठे किए और धड़ाम से सोफे पर बैठ गई। यह उसके जीवन का अन्तिम तमाशा था जो उसने आज अनिल को दिखाया। काश, उसे यह नाटक न करना पड़ता। वह रो पड़ी, खूब रोई ···फूट-फूट कर रोई और न जाने कब तक रोती रही।

अनिल सीधा अपने घर आया और दूसरे दिन ही वह हवाई जहाज से बम्बई वापिस चला गया। वह सोच रहा था कि भगवान ने उसे बचा लिया। अगर शादी के बाद वह नाचने लगती, शराब पीती तो उसका जीवन बर्बाद हो जाता। वह घर की उलझनों में ही उलझ जाता और कुछ नहीं कर पाता। आदमी पहाड़ की चोटीसे गिरकर खड़ा हो सकता है लेकिन नैतिकता से एक बार गिरकर फिर नहीं संभल सकता। वह जिसे कीचड़ का कमल समझता था, वह कीचड़ का कीड़ा निकला, जोकि कीचड़ की गंदगी में ही जीवित रह सकता है। जिसे जूठे पत्ते चाटने की आदत पड़ जाए, उसे एक जगह बैठकर आराम से एक बार खाने में मजा नहीं आता। जगह-जगह घास में मुंह मारने वाले जानवर को खूंटे से नहीं बांधा जा सकता। उसे अपने आप पर भी क्रोध आता है। कि वह उसे समझ क्यों नहीं सका! चरित्र से गिरने के बाद औरत गिरावट की किसी भी हद तक गिर सकती है। कितनी मक्कार और धोखेबाज! कहती थी कि उसने शराब छोड़ दी है, नाचना छोड़ दिया है। वह उससे प्यार करती है। उसी की होकर रहना चाहती है और उसने उस पर विश्वास कर लिया। कुलटा पर विश्वास···चरित्रहीन स्त्री पर विश्वास···कैबरे डांसर पर विश्वास···

वेश्या पर विश्वास ! कितनी बड़ी भूल थी उसकी । कितनी बड़ी मूर्खता थी उसकी । उसे एक से एक अच्छी और सुन्दर स्त्री मिल सकती है । उच्च परिवार की । नेक और पढ़ी-लिखी । वह अपने भाग्य की सराहना कि उसे ठीक समय पर वास्तविकता का पता चल गया । वह कुएं में गिरने से बच गया । वह दलदल में धंसने से बच गया । वह उसे भूल जाएगा । उसे भूल ही जाना चाहिए । वह इसी योग्य है ।

लता का जिगर का दर्द हर रोज बढ़ता गया । जब वेदना असह्य हो गई तो वह अस्पताल में चली गई । डाक्टर उसका इलाज करते । दवाइयां देते, लेकिन वह जानती थी कि वह मृत्यु के रास्ते के उस मोड़ पर पहुंच गई है, जहां से लौटना या वापिस आना मुश्किल और असंभव है । उसके पास थी केवल लक्ष्मी । लक्ष्मी उसे सांत्वना देते हुए कहती—'दीदी, तुम अच्छी हो जाओगी ।' वह उसके उत्तर में, इस पीड़ा में भी एक मुस्कान बिखेर देती । जब उसकी पीड़ा असह्य हो जाती तो डाक्टर इंजेक्शन लगा देते । वह प्रायः डाक्टर से कहती—'मेरी वेदना की अवधि को क्यों बढ़ा रहे हो ! मेरे लिए जिन्दगी में कुछ नहीं है । मैं और जीना नहीं चाहती । मुझे ऐसी दवा दो जिससे मैं सदा के लिए सो जाऊं । जीवन के रास्ते में तो मुझे मंजिल नहीं मिली । अब मौत के रास्ते पर तो मुझे जल्दी से जल्दी मेरी मंजिल पर पहुंचा दो ।'

वह अनिल के पत्र अपने साथ अस्पताल ले आई थी । उन्हें बार-बार पढ़ती ।

लता की हालत हर रोज खराब होती गई । वह बहुत कमजोर हो गई थी । पीली पड़ गई थी । डाक्टर ने लक्ष्मी से कह दिया कि अब वह एक आध दिन की मेहमान है । लक्ष्मी ने अपने आंसुओं को रोककर लता से पूछा—'दीदी, किसी से मिलना चाहती हो ?' लता ने कहा—'हां, लक्ष्मी । मैं अनिल से मिलना चाहती हूं । केवल अनिल से । तुम अनिल को तार भिजवा दो कि मैं संसार से विदा लेने से पूर्व उसे देखना चाहती हूं ।'

लक्ष्मी ने अनिल को तार भेज दिया । लता ने लक्ष्मी से वह गुलाबी साड़ी लाने को कहा जो अनिल उसके लिए बम्बई से लाया था । वह साड़ी, जो अनिल चाहता था कि वह उसके साथ विवाह के समय पहने । वह साड़ी,

जिसे अनिल ने क्रोध में फाड़कर फेंक दिया था। वह साड़ी, जिसके टुकड़े टुकड़े को इकट्ठा कर उसने सी लिया था।

लक्ष्मी वह साड़ी ले आई। उसने उसे बड़ी कठिनाई से पहना, क्योंकि उसके लिए उठना-बैठना बहुत कठिन था। बिंदिया लगाई। रात को अनिल ने अस्पताल में टेलीफोन किया कि वह अगले दिन सुबह नौ बजे तक हवाई जहाज़ से दिल्ली पहुंच जाएगा।

लता के चेहरे पर यह सुनकर एक हल्की मुस्कान आ गई। उसने डाक्टर से कहा—'डाक्टर, मुझे सुबह नौ बजे तक जिन्दा रखो। डाक्टर, मैं तुमसे कुछ घंटों का जीवन-दान मांगती हूं, केवल कुछ घंटों का। जब मैं मरना चाहती थी, तुमने मरने नहीं दिया और अब मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं कि मुझे नौ बजे तक बचा लो।'

अनिल सुबह साढ़े आठ बजे हवाई अड्डे पर पहुंचा। टैक्सी की और अस्पताल की ओर चल दिया। उसके दिल की धड़कन तेज़ थी। वह सोच रहा था कि वह तो किसी और से विवाह करना चाहती थी। क्या उसका किसी और से विवाह नहीं हुआ। आखिर ऐसा क्यों ?'

वह अस्पताल पहुंचा और टैक्सी वाले को बीस का नोट दिया। बिना बाकी पैसे लिए अस्पताल की सीढ़ियां धड़ाधड़ चढ़ता गया। वार्ड नम्बर नौ किसी से पूछा। अनिल ने आवाज़ लगाई—'लता, लता···मैं आ गया।' अनिल तेज़ी से कमरे के अन्दर प्रवेश कर गया। उसकी नज़र लता पर पड़ी। लता उसी गुलाबी साड़ी में लिपटी हुई थी। उसके ललाट पर लाल बिंदिया चमक रही थी। उसकी आंखें दरवाज़े की ओर मुड़ी हुई थीं, शायद किसी को देखने की लालसा में, और हाथ में अनिल का आखिरी पत्र था। अनिल को अब स्पष्ट हो गया कि लता को उस दिन समझने में उसने भूल की थी। नर्स ने आंखें बन्द कर दीं और उस पर सफेद कपड़ा डाल दिया। अनिल अब अपने छलकते हुए आंसू न रोक सका और यह आंसू सफेद चादर